सृजन

2006

रेडियो कश्मीर श्रीनगर प्रकाशन

आदरणीय श्री प्रो० भूषण लाल कौल साहेब को सादर

[signature]
8.9.2007

सृजन

2006

रेडियो कश्मीर श्रीनगर

सृजन

2006

संरक्षक

चौधरी गुलाम हुसैन ज़िया

संयोजक

रफ़ीक राज़

संपादक

सतीश विमल

रेडियो कश्मीर श्रीनगर

सृजन : 2006

संरक्षक : चौधरी गुलाम हुसैन ज़िया (केन्द्र निदेशक)

संपादक : सतीश विमल

आवरण : (आज़ादी का भ्रमजाल) सय्यिद हुमायूँ कैसर

कम्पोज़िंग : शाहनवाज़ अहमद खोसा

मुद्रण : यू. सी. सी. कमप्यूटर्स एवं प्रिंटर्स, मंदिरबाग, श्रीनगर

सृजन मँडल : श्री रफ़ीक राज़ (उपनिदेशक, कार्यक्रम)
श्री अब्दाल महजूर (कार्यक्रम निष्पादक)
श्री अब्दुस्समद बेग (वरिष्ट प्रशासनिक अधिकारी)
श्री राजेन्द्र कौल (हिन्दी लिपिक)

रेडियो कश्मीर श्रीनगर–190001

0194.2452287 (एक्सचेंज) 0194.2452168 (केन्द्र निदेशक) 0194.2455069 (ड्यूटी कक्ष)

शहनाई के शहनशाह

भारत रतन

उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ

को

समर्पित

प्रियरंजन दासमुंशी
P.R. Dasmunsi

सूचना और प्रसारण
एवं संसदीय कार्य मंत्री
भारत सरकार
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001
Minister of
Information & Broadcasting
and Parliamentary Affairs
Govt. of India
Shastri Bhawan, New Delhi-11000

05 SEP 2006

संदेश

विविधता में एकता अपने देश की विशेषता है। विभिन्न भाषाओं, धर्म और जातियों के बीच हिन्दी का उद्भव और विस्तार इसी विशेषता का उत्कृष्ट प्रमाण है। बहुभाषी राष्ट्र में विचार-विनिमय के लिए हिन्दी को राजभाषा का सम्मान दिया गया और हिन्दी देश में प्रचलित होती गई। आज यह विश्व की अग्रणी भाषाओं में अपना महत्वपूर्ण सीन बना चुकी है।

हिन्दी अभिव्यक्ति का परिपक्व और सार्थक माध्यम है। विज्ञापन प्रसारण सेवा, श्रीनगर द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका ''सृजन'' इस बात का सूचक है कि विभिन्न भाषाई भी हिन्दी में लेखन और पठन के लिए सहज और उत्साही हैं।

(प्रियरंजन दासमुंशी)

श्री गुलाम हुसैन ज़िया
केन्द्र निदेशक
रेडियो कश्मीर, श्रीनगर

सुरेंद्र कुमार अरोड़ा
सचिव
दूरभाषः 23382639

सचिव
SECRETARY,
सूचना और प्रसारण
INFORMATION & BROADCASTING
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

नई दिल्ली-१, तारीख ... २००
Dated New Delhi-1, the ... 200

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि रेडियो कश्मीर, श्रीनगर अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका "सृजन" के वर्ष 2006 का अंक निकालने जा रहा है । यह बड़े ही गौरव की बात है कि **"सृजन - 2006"** में समस्त भारतवर्ष की प्रमुख भाषाओं से चुनी हुई अनूदित रचनाओं और जम्मू - कश्मीर की विलक्षण संस्कृति से संबंधित सामग्री का समावेश होगा ।

इस अंक का प्रकाशन सफल हो और पत्रिका - प्रकाशन की यह परंपरा जारी रहे, ऐसी मेरी मंगल कामना है ।

सुरेंद्र अरोड़ा

(सुरेंद्र कुमार अरोड़ा)

प्रसार भारती

PRASAR BHARATI

भारतीय प्रसारण निगम

Broadcasting Corporation of India

ब्रिजेश्वर सिंह, आई.ए.एस.

महानिदेशक : आकाशवाणी

Brijeshwar Singh, I.A.S.

Director General : All India Radio

Tel : 2342 1300 (O)

2342 1061 (O)

Fax : 2342 1956

आकाशवाणी भवन, संसद मार्ग,

नई दिल्ली-110 001

Akashvani Bhavan, Sansad Marg,

New Delhi - 110 001

संदेश

यह अत्यन्त ही हर्ष का विषय है कि रेडियो कश्मीर, श्रीनगर द्वारा वार्षिक पत्रिका "सृजन-2006" का प्रकाशन किया जा रहा है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। संविधान में वर्णित सभी प्रांतीय भाषाओं के साथ-साथ इस विशाल बहुभाषी राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने में हिन्दी की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। जीवन के हर पहलू में हम अग्रणी हो रहे हैं तो राजभाषा के प्रयोग में भी हों, तभी हम अपनी सांविधिक अपेक्षाओं को पूरा कर सकेंगे। मुझे आशा है कि भारत की प्रमुख भाषाओं से चुनी हुई अनूदित रचनाओं से भरपूर एवं जम्मू-कश्मीर की विलक्षण संस्कृति को परिलक्षित करते हुए "सृजन-2006" का यह अंक पाठकों एवं पर्यटकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

ब्रजेश्वर सिंह

(ब्रजेश्वर सिंह)

श्री गुलाम हुसैन ज़िया,

केंद्र निदेशक,

रेडियो कश्मीर श्रीनगर

प्रसार भारती

PRASAR BHARATI

(भारतीय प्रसारण निगम)

(Broadcasting Corporation of India)

नवीन कुमार

महानिदेशक

Navin Kumar

Director General

दूरदर्शन महानिदेशालय

DIRECTORATE GENERAL DOORDARSHAN
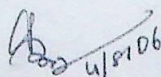
दूरदर्शन भवन,
कॉपरनिकस मार्ग,
नई दिल्ली-110 001

Doordarshan Bhawan,
Copernicus Marg,
New Delhi-110 001

संदेश

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि रेडियो कश्मीर, श्रीनगर अपनी वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन करने जा रहा है ।

कश्मीर की वादी जहां प्राकृतिक सौन्दर्य का मनोरम स्थल है वहीं यहां की सांस्कृतिक परम्परा और रीति-रिवाज भी समृद्ध हैं । स्वाभाविक है सृजनशीलता भी उच्च कोटि की होगी । मुझे विश्वास है 'सृजन' में इस अनुपम सुन्दरता और संस्कृति का मेल होगा ।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आपकी पत्रिका का विशेष योगदान है । हिन्दी भाषा के प्रति समर्पित इस सद्प्रयास के लिए मैं रेडियो कश्मीर, श्रीनगर को बधाई देता हूँ और 'सृजन' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

4/8/06

(नवीन कुमार)

श्री गुलाम हुसैन जिया,
केन्द्र निदेशक,
रेडियो कश्मीर,
श्रीनगर

दूरभाष Tel : 91-11-23386055, 23388159 फैक्स Fax : 91-11-23385843 ई-मेल E-mail : nkumar@dgdd.org.in

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
MINISTRY OF
INFORMATION & BROADCASTING

नई दिल्ली-१, तारिख
Dated New Delhi-1, the

समय सिंह कटारिया,
निदेशक (राजभाषा),
दूरभाष: 23384214

14.08.2006

संदेश

हर वर्ष की तरह यह खुशी का मौका है जब रेडियो कश्मीर, श्रीनगर अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका **सृजन** का प्रकाशन करने जा रहा है। यह प्रकाशन वास्तव में संविधान की धारा 351 में की गई संकल्पना की पूर्ति की ओर एक विशेष कदम होगा।

जम्मू - कश्मीर भारतवर्ष के लिए शिरोमणि है, इसके नाते यहा से प्रवाहित होने वाली नदियाँ जिस प्रकार मैदान मे जाकर उसे उपजाऊ बनाती हैं ठीक उसी प्रकार यहाँ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका **सृजन** भी पूरे देश के लिए एक मिसाल कायम करेगी।

इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और इसके सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

(समय सिह कटारिया)

श्री गुलाम हुसैन जिया,
केंद्र निदेशक,
रेडियो कश्मीर,
श्रीनगर।

केन्द्र निदेशक चौधरी गुलाम हुसैन ज़िया की ओर से दो शब्द

'सृजन' के पिछले कुछ अंकों की अपार सफ़लता से हमारे हौसले और सुदृढ़ होगए हैं। रेडियो कश्मीर श्रीनगर राज्य में शांति स्थापना, हिंसा के विरुद्ध जंग, न्याय, राष्ट्रीय सुरक्षा एवँ लोक–सेवा प्रसारण के अपने मिशन पर और सक्ष्मता के साथ कार्यरत है एवं इस प्रसारण इकाई की भूरि भूरि प्रशंसा के लिए हम सभी के आभारी हैं। हम कश्मीर की जनता की आवाज़ हैं– जनसाधारण की इस मान्यता से हम सम्मानित हुए हैं और अपना यह प्रण दोहराते हैं कि हम जनता के प्रतिनिधि बनकर आवाज़ देते रहेंगे और सोये दिलों को जगाते रहेंगे।

राष्ट्रभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु केन्द्र द्वारा उठाये गए क़दम सफ़ल हो रहें हैं, यह हमारे लिए प्रसन्नता का विषय है। हिन्दी के लिए कर्मचारियों में रुचि दिनोदिन बढ़ रही है। आने वाले दिनों में हिन्दी–प्रचार हेतु और कारगर क़दम उठाए जायेंगे।

'सृजन' की इस यात्रा में हमारे साथ चलने हेतु आभार।

जय हिन्द

संपादकीय

रब की मेहर से 'सृजन' का सफ़र जारी है। राजभाषा के प्रति हमारी प्रीति और इसके प्रचार–प्रसार हेतु हमारा संकल्प है----**'सृजन'**। हमारे इस प्रेम और संकल्प को देश भर के हिन्दी प्रेमियों ने सराहा तो हमारा हौसला और बढ़ गया। **'सृजन'** का नया अंक लेकर हम आपके सम्मुख पुनः उपस्थित हैं।

कश्मीर की संस्कृति पर कुछ लेखों के अतिरिक्त आध्यात्म से जुडे लेख भी सृजन के इस अंक में आपको मिलेंगे। साथ ही हमने इस अंक में भारत की प्रमुख भाषाओं से चुनी हुई अनूदित कृतियाँ भी शामिल की हैं। आशा है हमारा चयन आपको पसंद आयेगा।

'सृजन' ज्ञान–भूमि कश्मीर में रक्तपात और आतंक के अंधकारमय दौर को हराने के एक बड़े मिशन का हिस्सा है। **'सृजन'** कश्मीर में शान्ति की पुनर्स्थापना का परिचायक है। हमें पूर्ण विश्वास है कि इस औलोकिक भूखण्ड के कण–कण में समायी शाक्ति अलगाव, हिंसा, वैमनस्य और घृणा के राज्य की स्थापना के सभी षड्यन्त्रों को परास्त करदेगी। 'सृजन' घाटी में अच्छे दिनों के लौट आने की कामना है।

सतीश विमल

इस अंक में ......

1. सृजन गैलरी से — निदा नवाज़ / 1
2. विनोबा का पैगाम — संपादक / 4
3. क्षेमेन्द्र और उनकी रचनाएं — के. के. लिद्दू / 18
4. हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) का मानवतावादी संदेश — डॉ. मज़हर अहमद खाँ /23
5. अमर यात्रा — पीरज़ादा अब्दाल महजूर/30
6. श्रीनगर : एक परिचय — डॉ. दरख़शां अंदराबी/37

भारतीय भाषाओं से

7. तमिष कविता / जाति — वैरमुन्तु /45
8. कन्नड़ कविता/लिखता ही रहा हूँ — सिद्धलिंग देसाई / 50
9. असमिया कविता / कविता — हीरेन भट्टाचार्य / 52
10. तेलुगू लेख / आंध्र प्रदेश की एतिहासिक पृष्टभूमि — डॉ. पी. वी. नरसा रेड्डी/54

11. हिन्दी कहानी / अपना-अपना अकनन्दुन — एम. के. संतोषी / 71
12. हिन्दी कहानी / बोलो ज़िन्दाबाद — सतीश विमल / 81
13. हिन्दी कविता / विस्थापन — डॉ. अरूणा शर्मा / 87
14. मलयाळम कविता / महान दीवार पर — के. सच्चिदानंदन / 89
15. गुजराती कविता / रात — जगदीश जोशी / 91
16. संस्कृत कहानी / यही तो मैं हूं — ओमप्रकाश ठाकुर / 94
17. ओड़िया कविता / चंपाफूल — अपर्णा महांति / 97
18. पंजाबी कहानी / चल बुद्धू कहीं की — डॉ. अरवेन्द्र अमन / 99
19. हिन्दी कहानी / रामप्रशाद — शकुन्त दीपमाला / 101
20. हिन्दी कविता / ज़ख़्मी लोकतंत्र से — शेख मुहम्मद कल्याण /111
21. हिन्दी कविता / भूख और चांद — डॉ. रति सक्सेना / 114
22. डोगरी कविता / अज्ञात दूरियों का आकाश — डॉ. जितेन्द्र उधमपुरी /115
23. मराठी कविता / आंखें — बलवंत धोंगडे / 117
24. हिन्दी समिति सूची — 119

सृजन गैलरी से

निदा नवाज़

☞ संसार भर में 5000 भाषाएं और उपभाषाएं बोली जाती हैं बच्चों की कहानी अरी (च्योंटी) 1/18 x 1/18 इंच साइज़ के बीस पृष्टों पर टोकियो में 1980 ई. में प्रकाशित की गई। यह अब तक की लघुतम मुद्रित बाल पुस्तक है। 1987 में 208 पृष्टों की पुस्तक पडुआ में छपी थी जो संसार की सबसे छोटी पुस्तक मानी जाती है, जिसका आकार 1 सेन्टीमीटर x 1/2 सेन्टीमीटर है।

☞ महाभारत महाकाव्य के कुल एक लाख छन्द हैं जो यदि प्रसिद्ध महाकाव्य इलियड और ओडेसी को मिलाया जाये तब भी उनसे आठ गुना बड़ा है - रामायण के कुल 24,000 छन्द हैं

☞ संसार का सब से प्राचीन समाचार पत्र जो अभी तक निरंतर छपता है वह है 1644 ई. में शुरू किया गया स्वीडन का सरकारी पत्र जिसे रॉयल स्वीडिश अकादमी ने प्रकाशित किया था।

☞ संसार भर के 50% समाचार पत्र संयुक्त राज्य अमेरिका और

कनाडा में छपते हैं।

- चीनी भाषा के टाइपरायटरों में चरित्र हैं।
  की-बोर्ड करीब एक मीटर चौड़ा होता है और 11 शब्द प्रतिमिनट का टंकन श्रेष्ठतम माना जाता है।
- परेशानी के लिए चीनी में जो चरित्रचित्र इस्तेमाल होता है वह है एक छत के नीचे दो औरतें।
- चीनी लिपि में 40 हज़ार से अधिक शब्द-चित्र हैं जिन्हें चरित्र कहते हैं।
- लार्ड टेनीसन अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध कवि हैं उन्होंने 12 वर्ष की आयु में छः हज़ार शब्दों की एक लम्बी कविता लिखी।
- प्राचीनकाल में जब यूनानियों ने लिखना आरम्भ किया, तो वह पहली पंक्ति दायें से बायें दूसरी पंक्ति बायें से दायें और फिर तीसरी पंक्ति पुनः दायें से बायें लिखते थे।
- ओल्ड टेस्टामेंट में कुल 6000 शब्दों का प्रयोग किया गया है। शेक्सपेयर ने करीब 15,000 शब्दों का प्रयोग किया जबकि माना जाता है एक सामान्य व्यक्ति 2000 से कम शब्दों को अपनी बोलचाल में प्रयोग करता है।
- पश्चिमी क्लासीकी साहित्य में सब से लम्बा वाकय Victor Hugo ने Les Misrables में इस्तेमाल किया है - 823 शब्दों के इस

वाक्य में 93 कामा, 51 सेमिकोलन अथवा 4 डैश हैं।

- प्रसिद्ध अंग्रेज़ी उपन्यासकार थामस Hardy ने अपने जीवन के अंतिम 32 सालों में एक भी उपन्यास नहीं लिखा इस अवधि में उन्होंने कविताओं के ११ खण्ड रचे
- एक जनसभा में किसी भी वक्ता द्वारा सबसे तेज़ बोलने का रिकार्ड अभी तक पूर्व अमेरीकी राष्ट्रपति John F. Kennedy के खाते में है - 1961 दिसम्बर में एक जनसभा में उन्होंने ३२७ शब्द प्रति मिनट के हिसाब से बोला।
- पेराडाइज़ लास्ट मिलटन की सर्वश्रेष्ठ काव्य रचना मानी जाती है - पर मिल्टन को इस रचना के इवज़ केवल 50 डॉलर मिले थे।
- कमबोडयाई भाषा में सबसे अधिक अक्षर हैं जबकि रोटोकस भाषा में सबसे कम 11 अक्षर हैं।
- अंग्रेज़ी शब्द Set छोटे शब्दों में सबसे अधिक अर्थों वाला शब्द है संज्ञा के रूप में 58 अर्थ, क्रिया के रूप में 126 अर्थ एवं विशेषण के रूप में 10 अर्थ हैं।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

विनोबा का पैग़ाम

[श्री विनोबा भावे 22 मई 1949 से 20 सितम्बर 1949 ई. तक जम्मू कश्मीर की यात्र पर रहे। कई स्थानों पर उन्होंने जनसभाओं को संबोधित किया। प्रस्तुत हैं उन संबोधनों की रिकार्डिंग से संशोधित अंश ––– संपादक]

हमने जो काम उठाया है, वह ज़मीन का नहीं है। ज़मीन तो एक बहाना मात्र है। हमारा काम यह है कि दिल के साथ दिल जुड़ जायँ। हमने जो सवाल हाथ में लिया है, वह इतहाद का है। हम चाहते हैं कि दिलों का मेल हो। उसके लिए हमने बहाने के तौर पर ज़मीन के मसले जैसी एक ऐसी चीज़ हाथ में ली है, जो बुनियादी है और आज के ज़माने की माँग है। अगर हम ऐसा कोई मसला हाथ में न लेते और यहाँ आकर सिर्फ कहते जाते कि भाई, आपस में मत लड़ो, प्यार से रहो, तो ऐसा कहनेवाले तो कई सन्त हो गये। लोग उनकी बात सुनने

के आदी बन गये हैं। हम सिर्फ इतना ही नहीं कहते कि प्यार करो, बल्कि यह भी कहते हैं कि प्यार का सुबूत, निशानी, अलामत भी पेश करो। लोग दान देते हैं, तो हमारी बात उनके हृदय में पैठ जाती है, इसका सुबूत मिलता है।

दिलों को जोड़ना ही देश की मुख्य समस्या है।

हिन्दुस्तान की मुख्य समस्या यही है कि लोगों के दिल जुड़ जायँ। यहाँ अनेक जमातें रहती हैं, अनेक जमातों में अनेक मज़हब, पंथ हैं, जिनसे सुन्दर संगीत बन सकता है। केवल एक ही सुर हो, तो संगीत नहीं बनता। संगीत के लिए मुख्तलिफ सुर हों, यह निहायत ज़रूरी है। लेकिन वे सुर एक-दूसरे के खिलाफ़ न हों। अनेक मजहबों, अनेक जमातों का होना हिन्दुस्तान का वैभव, गुण है। यहाँ पर दुनिया भर से जमातें आयीं। तिलक महाराज ने तो कहा था कि हमारे पूर्वज उतर ध्रुव से आये थे। उतर में ऋषि-देश है, जिसे आजकल रशिया कहते हैं। यह कश्मीर कश्यप ऋषि का स्थान है। कश्मीर से लेकर जो कश्यप समुद्र है वहाँ तक कश्यप कवि ने पराक्रम किया है, जैसे कि दक्षिण में अगस्त्य ऋषि ने पराक्रम किया।

दुनियाभर में कुछ कशमकश भी चली, लेकिन हमने प्रेम से सबको हजम कर लिया; यहाँ आये और हमने उन्हें जज़्ब कर लिया ; यहाँ ईसाई, मुसलमान आदि जो भी आये, उन पर यहाँ की हवा का रंग चढ़ा। उनमें हिन्दुस्तान की सिफत आयी। एक मिली-जुली सभ्यता यहाँ बनी। यहाँ हिन्दू और मुसलमान बड़े प्रेम से रहते थे। परन्तु अंग्रेज़ों ने यहाँ आकर फूट डाली और शासन करो का रवैया अपनाया, जिससे तमाम राजनैतिक झगड़े पैदा हुए। जहाँ सियासी बातें आती हैं, वहाँ दिमाग के टुकड़े हो जाते हैं।

हिन्दूस्तान में अनेक धर्म हैं, अनेक पंथ हैं। उनका ठीक उपयोग करने का फ़न और सिफ़त होनी चाहिए। तभी वह खूबी क़ायम रहेगी। यहाँ लद्दाख में बौद्ध हैं। जम्मू में हिन्दू और सिख हैं, कश्मीर में मुसलमान हैं, ऐसे चार धर्म यहाँ हैं। इसके अलावा कुछ ईसाई भी होंगे, ऐसी मुख्तलिफ़ जमातें यहाँ हैं, तो हमें उनका ठीक उपयोग करना चाहिए। हम यह न समझें कि यह मुख्तलिफ़ जमातें हमारे मार्ग में रोड़े डालेंगी। ये रोड़े नहीं, सीढ़ियाँ हैं। भोजन में खारापन, मीठापन, तीखापन सब तरह

के रस होने चाहिए। वैसे ही हिन्दू, बौद्ध, सिख, इस्लाम आदि अनेक धर्मों में भी अलग-अलग रस है। सभी धर्मों की सीख या सार हमें समझना चाहिए। वह एक ही है।

●

यहाँ पर हम सब तरह के भेद मिटायेंगे, तो बड़ा आनन्द आयेगा और कश्मीर एक सुन्दर स्वर्ग बन जायगा। इस स्वर्ग में सुविधा भी है। कश्मीर में ठंडक हुई, तो जम्मू में आने की सुविधा है। गर्मी हुई, तो हम कश्मीर में जा सकते है। दोनों प्रकार की आबोहवा का लाभ मिल सकता है, यह अच्छी बात है। कुदरत ने हमें बहुत नियामतें दी हैं, इसमें विज्ञान से भी मदद मिल सकती है। लेकिन विज्ञान की एक शर्त है। उस शर्त के साथ उसका उपयोग हमें करना होगा, नहीं तो खात्मा होगा। हमें विज्ञान से लाभ लेना चाहिए और हम उसे ले सकते हैं। उसके लिए हमें प्रेम से मिल-जुलकर रहना चाहिए।

●

कश्मीर वालों की बड़ी हैसियत है। वे हिन्दुस्तान के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। उसके लिए एक ही बात करनी है।

जैसे कुदरत में मेल-जोल है, ऐसे हमारे जीवन में भी हो।

अब मैं चाहता हूँ कि हम सब एक हों। कश्मीर वाले यह न समझें कि हम कश्मीर के बाशिंदे हैं या हिन्दुस्तान के बाशिंदे हैं। बल्कि हम यह समझें कि हम दुनिया के बाशिंदे हैं।

●

हम अपने हाथ-पाँव और दिल-दिमाग़ पर भरोसा करें, नेक काम करें और एक होकर काम करें। हम ऐसा करते हैं, तो हमारा नसीब एक हद तक हमारे हाथ में रहता है। उस हद के बाद वह और किसी के हाथ में है, तो ख़ुदा के, हुकूमत के या दूसरे किसी के हाथ में नहीं। ख़ुद और ख़ुदा- ये दो नुक़्ते मज़बूत बनाओ। दोनों को जोड़नेवाली जो लकीर होगी, वही हमारा रास्ता, सबील होगी। लकीर दो नुक़्तों से बनती है। उन दोनों को जोड़ने से हमारे लिए रास्ता बन जाता है। पहला नुक़्ता हम ख़ुद हैं, जहाँ हम काम करते हैं और दूरसा नुक़्ता ख़ुदा है, जहाँ हमें पहुँचना है।

●

हम अपना आलीशान मकान बनाते हैं, जब कि आसपास झोंपड़े भी होते हैं। हमारी ज़िन्दगी के लिए सारा सामान मुहैया है, फिर हमारे घर के लिए कोई खतर न हो, इसलिए हथियार लेकर रक्षा के लिए, बचाव के लिए हम सन्तरी खड़े करते हैं। इस तरह हमारा अपना घर भरा है कबीर का एक शेर है-

'पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ी दाम

दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।।"

किश्ती में पानी भरा, यह खुशखबरी नहीं, डर है, इसीलए उसे दोनों हाथों से उलीचना चाहिए। जिस घर में पैसा भर गया, उसकी भी हालत उस किश्ती जैसी हो जाती है। पानी चाहिए, पर किश्ती के बाहर-नीचे, अन्दर नहीं। वैसे ही पैसा, धन, दौलत चाहिए जरूर, पर घर में नहीं, घर के बाहर, समाज में। दौलत को घर में कैद कर रखें, तो खतरा है। दौलत इस हाथ से उस हाथ में जानी चाहिए। जैसे फुटबॉल का खेल होता है। अगर मैं गेंद न फेंकूँ, अपने ही हाथ में लिये रहूँ, खुदगर्ज बनूँ, तो खेल खत्म हो जायगा। जहाँ गेंद हाथ में आया, तो उसे फौरन लात मारकर आपके पास भेज दिया जाता है,

वैसे ही दौलत एक के हाथ से दूसरे के हाथ में, समाज में बहती रहनी चाहिए, दौड़ती रहनी चाहिए, फैलती रहनी चाहिए। ऐसा करने से ही समाज की जिन्दगी अच्छी, खुशहाल बनती है।

●

कुरआनशरीफ़ में आता है - ''वयुअतुज्जकात।' जकात देनी चाहिए। 'मिम्मारजकना हुम युनफ़िकून।' जो भी थोड़ा है, उसीमें से देना चाहिए। देना धर्म है और धर्म सभी को लागू होता है, इसलिए ग़रीबों को भी देना चाहिए। जो भी थोड़ा मिलता है, उसीमें से पेट काटकर देना चाहिए। देने का यह फ़र्ज हर एक को अदा करना चाहिए। किसान क्या करता है ? फसल आयी, तो बोने के लिए उसमें से अच्छे-से-अच्छा, उतम-से-उतम बीज निकालकर रखता है, क्योंकि दिये बग़ैर खाना नहीं चाहिए। इसीलिए थोड़ा गल्ला हो, तो भी उसमें से किसान बोने के लिए निकालकर रखता है। खाने को कम हो, तो भी वह नहीं खाता। यह एक तरह से उसकी कुर्बानी है। इसलिए भगवान् खुश होते हैं और दसगुना देते हैं। इसलिए हम

भी अपना फ़र्ज अदा करें, रहम करें और इन्साफ रखें। अगर हम इन्साफ़ भी न करें, तो इन्सान गिरेगा। इसलिए 'मीज़ान' रखें, 'तराजू' रखें। इन्साफ़ दें और ज़्यादा रहम करें। आज रहम की सख्त ज़रूरत है।

''जो ईमान रखते हैं, वे नेक अमल भी करें।" इसका मानी यह है कि ईमान की कसौटी अमल ही है। इसलिए 'तिलावत करेंगे और जन्नत में जायेंगे' - ऐसा मानना ग़लत है। संस्कृत में कहावत है। 'श्रुतं हरति पापानि।' (सुन लिया और पाप मिट गये)। लेकिन सुनने भर से पाप ख़त्म नहीं होते। उसके लिए तो अमल करना चाहिए। अल्लाह से हमने भर-भरकर रहम पाया है। इसलिए हमारा भी फ़र्ज है कि हम भी इन्साफ करें, रहम करें। यह सूझ सूझती है अल्लाह का नाम लेने से ही। इसलिए 'सूर-ए-हश्र' की तिलावत करते हैं। अल्लाह 'अल्हक़' है, तो हमें भी सचाई से चलना चाहिए। वह 'अल्रहमान' है, तो हमें भी रहम करना चहिए।

●

कुछ लोगों का ख़याल है कि बाबा बिलकुल पुराने

दक़ियानूस औज़ार लेकर गावँ में काम करना चाहता है। लेकिन यह बिलकुल ग़लत बात है। मैं तो चाहता हूँ कि गावँ में 'एटॉमिक एनर्जी' आये जो विकेन्द्रित हो। मैं उसके इन्तजार में हूँ। मुझे साइन्स का क़तई डर नहीं है। मैं चाहता हूँ कि साइन्स का इंजन ज़ोरदार चले। हमारी ज़िन्दगी की ट्रेन बहुत रफ़तार से बढ़े, लेकिन उसके लिए पटरी रूहानियत की हो। इन्जन साइन्स का हो, लेकिन ट्रेन किस पटरी पर चले, यह इन्जन नहीं बतायेगा, यह अक्ल उसे नहीं है। इसलिए मैं साइन्स के इन्जन के साथ रूहानियत की पटरी चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि इस तरह गाँव का, मुल्क का और दुनिया का मन्सूबा बने। इस मन्सूबे के दो पहलू होंगे : 1. रूहानियत और 2. साइन्स।

●

आप कामदान करेंगे, तो जम्मू-कश्मीर में एक बुनियादी इनकलाब होगा और ऐसे तरीके से होगा कि सबको सब किस्म का फ़ायदा होगा। किसी को कोई नुक़सान नहीं होगा। यहाँ के लोगों ने हमें यक़ीन दिलाया है कि यहाँ ग्रामदान होगा और हम

करके ही रहेंगे। तब हमें एहसास हुआ कि हम यहाँ आये हैं, तो यहाँ के लोगों की ख़िदमत में हम कुछ कर सकते हैं और भगवान् के भरोसे वह होकर रहेगा।

मैं देख रहा हूँ कि कश्मीर के लोगों के दिल तैयार हैं। ज़मीन तपी हुई हो तो पहली बारिश होने पर वह पानी को चूस लेती है, क्योंकि वह प्यासी होती है। वैसे यहाँ प्रेम की प्यास है। मुझे यहाँ अजीब तजुरबा हो रहा है। पहले मुझे इतना ख़याल नहीं था कि मैं कश्मीर जाऊँगा, तो इतनी हमदर्दी, इतना नरम दिल दीखेगा और इतने प्रेम के प्यासे लोग मिलेंगे। यहाँ मुझे जो तजुरबा हो रहा है, उससे मुझे लगता है कि अल्लाह का फ़ज़्ल इस मुल्क पर है। इससे यहाँ बहुत काम बनेगा।

यहाँ से सारी दुनिया को रोशनी मिली है। यह सिर्फ लफ़्जों की बात नहीं है। हमारे पुराणों में इसका ज़िक्र है। हमारे पुरखों ने माना है कि दुनिया का मरकज़ या मध्यबिंदु मेरु है। मेरु कहाँ है ? आज पता चलता है कि मेरु याने कश्मीर है - काश - मेरु याने प्रकाश्मेरु, जहाँ से चारों ओर प्रकाश फैलता रहता हैं, इसका जवाब पुराणों में दिया है कि वे मेरु के स्थान में रहते थे, याने आजकल की जबान में कश्मीर में रहते

थे। इसमें कोई शक नहीं कि हमारे पुरखे बहुत पुराने जमाने से यहाँ रहते होंगे और यहाँ से चारों ओर फैले होंगे। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि हमारे पुरखे उतरी धुव पर रहते थे ओर वहाँ से आगे बढ़े कुछ लोगों का ख़याल है कि हमारे पुरखा 'एशिया माइन्र' में रहते थे। लेकिन मेरा अपना ख़याल है कि एक ज़माने में कश्मीर सारी दुनिया का मरकज़ रहा होगा। यहाँ से चीन जा सकते हैं, हिन्दुस्तान के अन्य भागों में जा सकते हैं, पश्चिम एशिया भी जा सकते हैं। इस लिहाज से कश्मीर की तवारीख़ शायद दस हजार साल की होगी। इसकी खुसूसियत यह थी कि यहाँ मुख़्तलिफ जमातें रहती आयी हैं।

●

यहाँ के लोग सुख और दुख को बर्दाश्त करते गये। इसलिए वे पढ़े-लिखे भले ही न हों, लेकिन उनमें गहरा इल्म भरा हुआ है। वह इल्म तजुरबे से हासिल होता है और पुश्त-दर-पुश्त चला आता है, यानी बाप से बेटे को मिलता है। इसलिए यहाँ के लोग जाहिल नहीं हैं, वे एकदम किसी के बहकावे में नहीं आते हैं। उनकी जिन्दगी धीरे-धीरे आगे बढ़ती

है, इसलिए वे पिछड़े हुए दीख पड़ते हैं। ख़ासकर बाहर के लोग यहाँ आते हैं, तो कहते हैं कि यहाँ के लोग आगे बढ़े हुए नहीं हैं। इसमें कोई शक नहीं है ये लोग दूसरों को लूटने के काम में आगे बढ़े हुए नहीं हैं। ये नहीं जानते कि दूसरों को कैसे लूटना, चूसना और अपना बोझ दूसरों पर कैसे लादना। ये अपना बोझ खुद उठाते हैं। इसीलिए जाहिल या अज्ञानी कहे जाते हैं। लेकिन ये ईमानदार हैं, नेक हैं, अपने दोनों हाथों से काम करके जीना पसन्द करते हैं। दिल में प्यार है।

●

कहा जाता है कि ये लोग अंग्रेजी नहीं जानते हैं, यही बड़ी कमी है। ये अंग्रंजी नहीं जानते, तो अंग्रेज़ लोग कश्मीरी नहीं जानते। उनकी ज़बान अंग्रेज़ी है, तो इनकी कश्मीरी है। उनके लिए अंग्रेज़ी काफी है, तो इनके लिए कश्मीरी काफी है। लल्लेश्वरी ने कश्मीरी में गाने लिखे, जिनका अंग्रेजी तर्जुमा हमने पढ़ा, तो हमें अचरज मालूम हुआ। एक औरत ६०० साल पहले कश्मीरी ज़बान में इतने ऊँचे विचार लिखती है, तो वह जबान कमज़ोर नहीं मानी जायगी। कश्मीर के लोग बढ़े तजुर्बे

वाले हैं, हज़ार साल के पुराने हैं। इसलिए हमें यह ख़याल कतई नहीं करना चाहिए कि ये लोग पिछड़े हुए है।

मैं चाहता हूँ कि कश्मीर की यात्रा में कश्मीरी सीखूँ। यहाँ के तालीम के मंत्री से हमने कहा कि कृपा करके कश्मीरी किताबें नागरी और उर्दू-दोनों रस्मुल्ख़त (लिपि) में छापा कीजिए। इससे कश्मीरी के आगे बढ़ने में काफ़ी मदद मिलेगी। मैं चाहता हूँ कि कश्मीरी खूब बढ़े। कश्मीरी साहित्य को आप खूब बढ़ा सकते हैं। जहाँ इतनी खूबसूरत कुदरत है, वहाँ बड़े-बड़े शायर पैदा हो सकते हैं। उसके कश्मीरी में बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

●

आपमें से जो मुसलमान हैं, वे जानते हैं, कि जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए जाते हैं, तब नमाज़ पढ़नेवाले सभी लोग समान माने जाते हैं। बादशाह भी वहाँ मामूली लोगों के साथ बैठता है। यही इस्लाम के लोकतंत्र का ख़याल हैं। उपनिषदों में भी यही आता है। बाइबिल में भी ऐसा ही प्रसंग है। 'लव

दाय नेबर, येज़ दायसेल्फ' अर्थात् अपने जिस्म पर जितना प्यार हो, उतना ही प्यार पड़ोसी पर भी करो।

हमें जम्मू-कश्मीर में बहुत कुछ देखने, सुनने और सीखने को मिला। कुल मिलाकर बहुत ख़ुशी हुई। यहाँ के सब तबकों के लोगों के साथ हमारी मुलाकातें हुई। सभी लोग बेरोक-टोक हमसे मिलते थे। मुख़्तलिफ पार्टियों के लोग अपनी-अपनी बात हमारे सामने रखते थे। हमने देखा, अपनी बातें महसूस हुई। सबका दिल हमारे सामने खुला। जमातों से भी हमारी बातें हुई और इन्फ़िरादी तौर पर भी हुई। उन सबका और यहाँ जो देखा, उसका हम पर काफी असर रहा।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘
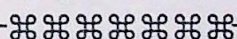
क्षेमेन्द्र और उनकी रचनाएँ एक संक्षिप्त परिचय

कँवल कृष्ण लिद्दू

सस्ँकृत साहितय समृद्ध रहा है, वह चाहे वैदिक दौर की रचनाऐं हों जैसे रामायण और महाभारत या बहुत बाद में महाकवि कालीदास की रचनाऐं । एक और दौर साहित्य का है जिसमें भले ही कालीदास जैसी उत्कृष्ठता न हो लेकिन उनका उदित होना भी कम महत्वपुर्ण नहीं। इन्हीं रचनाकारों में कश्मीर प्रदेश के सुप्रसिद्ध कवि और बुद्धिजीवी क्षेमेन्द्र आते हैं।

क्षेमेन्द्र का समय 990 ई. से 1065 ई. तक माना जाता है। वे स्वयं कहते हैं (उनकी भारत मन्जरी में दर्ज है) कि उन्होंने साहित्य शास्त्र का अध्य्यण ''अभिनवगुप्त" से किया था। चूँकि वे उनेक शिष्य थे।

क्षेमेन्द्र यद्यिपि अपनी मात्रभाषा कश्मीरी में ही लिखना

चाहते थे लेकिन राजदरबार की भाषा चूंकि संस्कृत थी, इस लिए उन्होंने संस्कृत भाषा को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। क्षेमेन्द्र के समय कश्मीर प्रदेश के शासक ''अनन्त" थे जिन्होंने (1028-1063) तक शासन चलाया और इसके पश्चात (1063-1081) तक अनन्त के पुत्र "कलस'' के युग में उन्होंने जीवन व्यतीत किया। क्षेमेन्द्र की मृत्यु (1065 ई.) में हुई।

क्षेमेन्द्र सम्पन्न परिवार के सुखी कवि थे। उनके दादा सिन्धु और पिता प्रकाशेन्द्र थे जो अमात्य थे यानी आज के संर्दभ में मन्त्रीपद पर थे। क्षेमेन्द्र ने कविकण्ठाभरण, भारतमन्जरी, औचित्यविचारर्चचा, सुवृततिलक, समयमातृका, और दशावतारचरित, जैसी रचनाऐं लिखी।

क्षेमेन्द्र संवेदनशील व्यक्ति थे और अपने समय के समाज के अन्दर कुरीतियाँ देख कर दुखी थे। मूल्यों का ह्रास हर ओर परिव्याप्त था। असमानता ऊँच नीच और छुआ छूत और तेज़ी से बिखरती केन्द्रीय सत्ता पूरे समाज के लिए चुनौति थी। अन्होंने अपनी कविताओं को समाज को जागृत करने का

माध्यम बनाया। ''समयमातृका'' जैसी बहुचर्चित रचना में वह स्वयं कहते हैं कि इसके पीछे उनका उद्देष्य सज्जनों की सम्पत्ति की वेश्याओं से रक्षा है।

अपने साहित्यिक जीवन के प्रभात में क्षेमेन्द्र मात्र अनुवादक प्रतीत होते हैं। क्षेमेन्द्र ''कवि कंठाभरन'' में स्वयं इशारा देते हैं कि लगातार अभ्यास के पश्चात ही कविता उनेक अन्दर उतर आई और माता सरसवती की कृपा उन पर हुई। कश्मीर की प्राचीनतम् रचना "बृहत्कथा'' पैशाची भाषा में लिखी गई थी, जिसके लेखक "गुणाढ़य'' थे। क्षेमेन्द्र ने "बृहत्कथा मंजरी'' के नाम से संस्कृत में इसका अनुवाद किया। "बृहत्कथा मंजरी'' में चर्चित कथाएं क्षेमेन्द्र द्वारा संक्षिप्त कर दी गई हैं। इन कथाओं में नारी के सौंदर्य और राजकुमारों के शौर्यकौशल का वर्णण आता है।

उनकी एक और बहुचर्चित कृति ''औचित्यविचारर्चचा'' है। क्षेमेन्द्र इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ''औचित्य'' ही जीवन का रस और उद्देश्य है। औचित्य को जीवन का केन्द्र बिन्दु मान कर वह इस बात की तरफ इशारा करते हैं कि वे ही

इसके सम्पूर्ण व्याख्याकार हैं।

"सुवृत्ततिलक'' में तीन अध्याय हैं और छन्द शास्त्र यानी कविता लिखने के विभिन्न आयाम और नियमों का उल्लेख आता है।

लेकिन उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना ''समयमातृका" के रूप में उदय हुई। इस गन्थ में उनकी प्रौढ़ता और परिपक्वता उजागर होती है। छः सौ पैंतीस श्लोकों का सुसंगठित काव्य है। जैसा पहले ही कहा गया है उनका इसके पीछे उद्दश्य वेश्याओं, कुटिनियों तथा विटों (जालसाज़ों) से श्रीमानों और सज्जन मित्रों और धनवान लोगों की सम्पति की रक्षा करना है। मात्र मनोरंजन ही नहीं अपितु समाज में व्यभिचार, अनाचार, कुरीतियों का उन्मूलन करके स्वस्थ वातावरण निर्मित करना है।

आज कल के हमारे हालात इस सब से भिन्न नहीं हैं। क्षेमेन्द्र आज भी प्रासंगिक लगते हैं। उनहोंने गुप्त तरीके से जो चेतावनियाँ अपनी लेखनी द्वारा उद्गोषित की थीं वह आज भी हमें चरित्र निर्माण, सृजन और मानव मूल्यों के अनुसरण के

लिए बाध्य कर देती हैं। ''समयमातृका" क्षेमेन्द्र के समय का दस्तावेज़ है और हैरानी की बात यह है जो नुक्ते और मुद्दों की बात उन्होंने की है वह आज के हमारे समाज का प्रतिबिन्ब लगता है। जनता की शासकर्वग द्वारा अवहेलणा, चरित्र हनन, लोगों की कथनी और करनी के बीच अन्तर, देशप्रेम का व्याप्त अभाव, षडयन्त्र वग़ैरह, इन सबके बारे में क्षेमेन्द्र जिस प्रकार जनता को आगाह करते हैं और स्वस्थ समाज के निर्माण में उनसे योगदान चाहते हैं वह हमारे आज के समय के उपयुक्त है।

वास्तव में कश्मीर के इस महान सपूत के प्रति समाज की श्रद्धाँजलि यही होगी कि समाज के स्वस्थ निर्माण में हमारा हर क़दम बढ़े।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

पैगम्बर
हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) की मानवतावादी दृष्टि

डॉ. मज़हर अहमद खाँ

इस्लाम धर्म के अनुसार पैगम्बरों की संख्या एवं उनकी परम्परा बहुत लम्बी है। यह मान्यता है कि पैगम्बरों की कुल संख्या एक लाख चौबीस हज़ार है। पैगम्बर का शाब्दिक अर्थ है - संदेश पहुँचाने वाला या संदेशवाहक। कुरआन शरीफ़ में स्पष्ट लिखा है - ''और (हे मोहम्मद) तुम से पहले भी हमने आदमियों को ही 'रसूल' बना कर भेजा.. " (सूरा : अल-अंबिया)। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक जाति के लिए एक पैगम्बर, अवतार या रसूल को भेजा गया है ताकि वह लोगों को सद्मार्ग दिखा सके; उनका पथ-प्रदर्शक बन सके। इस्लाम के अनुसार हज़रत आदम प्रथम और हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) अंतिम पैगम्बर थे।

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) का

जन्म सन् 571 ईसवी तद्नुसार रबी-उल-अव्वल माह में मक्का के कुरैश सम्प्रदाय में हुआ। इनके पिता का नाम अब्दुल्ला और माता का नाम अमिना था। ६३ वर्ष की अवस्था में 12 रबी-उल-अव्लन, सन् 633 में यह रहलत फरमा गए।

जिस समय उनका जन्म हुआ, उस समय सम्पूर्ण अरब देश की स्थिति दयनीय थी। लूट-पाट, हत्या, अज्ञान, संघर्ष, कोई कानून नहीं, प्रत्येक व्यक्ति अपने बाहुबल पर जीवित था। कन्या के जन्म लेते ही उसे तत्काल मार दिया जाता था। ऐसे लोगें को सद्मार्ग एवं सत्य की राह कोई असाधारण व्यक्ति ही दिखा सकता था। अधर्म और हिंसा को रोक कर हज़रत मोहम्मद ने धर्म और अहिंसा का संदेश लोगों तक पहुँचाया। प्रेम, करुणा, दया, सद्भाव और ईश्वर की भक्ति के लिए प्रेरित किया।

हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) ने 'तिरमज़ी हदीस' में एक स्थान पर फरमाया - ''अरहामू मन फ़िस्समा यरहामुकुम मन फ़िस्समा" अर्थात् तुम ज़मीन पर बसने वालों पर दया करो, अल्लाह तुम पर रहम करेगा। उन्होंने प्रतिकार या बदले की

भावना की निन्दा की और कहा अगर कोई बुराई करे तो उसका बदला बुराई से मत दो, उसे माफ़ करो। उन्होंने युद्ध के मैदान- 'जंगे बद्र' में भी शत्रु का बुरा नहीं चाहा, शत्रु को अभिशाप नहीं दिया। माना कि उन्होंने कई-एक युद्धों में भाग लिया लेकिन किसी भी युद्ध में उन्होंने किसी का वध नहीं किया, किसी को आघात नहीं पहुँचाया। उनके द्वारा दर्शाये गए मार्ग का जहाँ लोगों ने समर्थन किया वहीं उनके विरोधियों की भी कोई कमी न थी। लोगों की समस्याओं, कष्टों को दूर करने के लिए चिंतित रहते। कभी-कभी वह मक्का के पास स्थित 'ग़ारे हिरा' में ध्यानमग्न हो बैठ जाते और लोगों के कष्टों के निवारण का मार्ग तलाशते। दूसरों के दुखों से व्यथित हो, गिड़गिड़ा कर खुदा से दुआ करते कि इन पथभ्रष्ट लोगों को सद्मार्ग दिखायें।

एक दिन जब वह ग़ार में बैठे ध्यान कर रहे थे तो अचानक एक फरिश्ता जिसका नाम जिब्रील था, उनके सम्मुख उपस्थित हुआ और उन्होंने हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) को खुदा का संदेश दिया। इसी दिन से उन पर कुरआन शरीफ़ नाज़िल

हुआ। जैसे-जैसे खुदा का संदेश उन्हें प्राप्त होता, वह उसे अपने अनुयायिओं के सम्मुख रखते। उस समय उनकी आयु चालीस वर्ष थी। 23 वर्षों तक आंशिक रूप से कुरआन की 6666 आयतें उन पर नाज़िल हुईं। इस पवित्र ग्रन्थ में जीव, जगत्, आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग-नरक आदि सभी का चित्रण मिलता है। सन् ६२२ ई. में हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) मक्का से मदीना 'हिजरत' कर गए। तभी से इस्लाम में 'हिजरी सन्' का प्रारम्भ माना जाता है। जब सम्पूर्ण कुरआन शरीफ़ नाज़िल हो गया तब कहा गया कि आज के दिन तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए पूर्ण कर दिया और अपने वरदान को तुम पर पूरा किया। दसवीं हिजरी में हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) मक्का आए। उस समय 14 हज़ार मुसलमान वहाँ हज करने आए। हज़रत इब्राहीम ने खुदा की राह में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। यहाँ तक कि अपने पुत्र की कुरबानी भी उन्होंने दी थी। उन्होंने ही 'कॉबा' का निर्माण किया और लोगों से कहा-ए लोगो ! बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए घर बनवाया है और अब तुम्हें इसके हज और ज़ियारत के लिए बुलाता है।

हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना है 'मैराज' अर्थात् आध्यात्मिक यात्रा। उन्होंने चंद ही मिनटों में अर्श पर पहुँच कर; ख़ुदा के सन्निकट पहुँच कर बातें कीं। इतिहास में हज़रत मोहम्मद के अतिरक्ति ऐसे किसी भी नबी अथवा पैगम्बर का उल्लेख नहीं मिलता जिसे ''मैराज'' प्राप्त हुआ हो। अन्य अनेक कारणों से भी हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) अन्य पैगम्बरों से विशिष्ट हैं। एक तो उन पर कुरआन शरीफ़ अवतरित हुआ; दूरसरा यह कि वह अंतिम पैगम्बर थे। कुरआन शरीफ़ के सूरे अहराब में अल्लाह फरमाते हैं - ''वला किन रसूलल्लाह वा खातिमुन्नबीन" अर्थात् मोहम्मद अल्लाह के रसूल और सारे नबियों में खातिम हैं; अन्तिम हैं। पैगम्बरों का सिलसिला उन पर खत्म हो जाता है।

उन्होंने सभी वर्गों सम्प्रदायों को एक किया ; सभी को समान दर्जा दिया। एकेश्वस्वाद और निर्गुण खुदा की अराधना के लिए प्रेरित किया। ने कोई छोटा रहा, न कोई बड़ा। सभी कांधे से कांधा मिला कर एक पंक्ति में खड़े हो गए; सामूहिक रूप से परमात्मा के सामने नत मस्तक होने लगे। अरबी,

ईरानी, गोरे- काले के भेद को मिटाया; भाई चारे भी भावना को प्रतिष्ठित किया; प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिए ज्ञान, विद्या प्राप्त करना आवश्यक माना। इस सम्बन्ध में अल-हदीस में कहा गया है- ''उतलिबुल इलन्म व लौ का-न बिस्सीन,'' अर्थात् ज्ञान, विद्या प्राप्त करने यदि चीन भी जाना पड़े तो भी जाओ। दास-प्रथा को समाप्त किया। नारी को समाज में आदर और सम्मान दिलाया। उन्होंने नारी के आर्थिक आधार भी निर्धारित किए। उसे पति और पिता की सम्पति में भगीदार बनाया। सर्वविदित है कि मुसलमानों में पत्नी को परित्यक्त करने का अधिकार है, लेकिन हज़रत मोहम्मद (सल्लस.) ने स्पष्ट कहा है कि अल्लाह को तलाक़ पसंद नहीं है। उन्होंने माता-पिता को आदरणीय पद प्रदान करते हुए कहा है कि माँ के पैरों के नीचे स्वर्ग है। उन्होंने संयम, त्याग, दान और अपरिग्रह को अनिवार्य बनाया। दीन, दुखी, निर्धन, अपंग की सहायता करने को प्राथमिकता दी। उन्होंने कर्म की महानता और पवित्रता का पाठ लोगों को सिखाया। वह स्वयं अपने कपड़ों में पेबन्द लगाते, जूता ठीक करते, घर में झाड़ू लगाते, ऊँट की देखभाल करते। जब मस्जिद बनाई गई तो उन्होंने स्वयं मज़दूरों की तरह काम

किया। उन्होंने उजरत लेकर मक्का वालों की बकरियाँ चराईं। एक हदीस में उन्होंने कर्म की महानता प्रकट करते हुए फरमाया - ''कोई व्यक्ति उससे बेहतर रोटी नहीं खाता जो वह अपने हाथ से काम करके खाता है। उन्होंने अन्यत्र फरमाया - ''वह व्यक्ति जन्नत में दाखिल नहीं होगा जिसके अत्याचार से उसका पड़ोसी सुरक्षित न रहे। इस प्रकार उन्होंने सभी के साथ समान व्यवहार करने का आदेश दिया।

यह उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व का ही परिणाम था कि जुआरी, शराबी, व्यभिचारी और हिंसक मनुष्य भी यतीमों और विधवाओं के हमदर्द बने और कुकर्मों का परित्याग कर सच्चे अर्थों में मनुष्य बनें, उनकी पाशविकता दूर हुई और मानवता आई।

आज से लगभग 1400 पूर्व इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हज़रत मोहम्मद (सल्ल.) ने जो जीवन आदर्श प्रस्तुत किए वह आज भी प्रासंगिक हैं। उनके जीवन सिद्धान्त मानवतावादी और राष्ट्रवादी हैं। इस्लाम धर्म का दृष्टिकोण भौतिकवादी न होकर आध्यात्मिक है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘
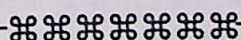
अमर यात्रा

पीरज़ादा अब्दाल महजूर

कश्मीर की सांस्कृतिक महता का उल्लेख भारत वर्ष के प्राचीनतम एवं महवपूर्ण ग्रंथों में बार बार हुआ है। महान इतिहासकार कल्हण राजतरंगणी के पहले तरंग के 43वें श्लोफ में कहते है।

तीन लोकें में सब से विशिष्ट है हमारा भूखण्ड और यह आर्यवृत का सबसे लुभावना प्रान्त है। हिमालय अपनी सुन्दरतम छटा यहीं बिखेरता है। यह विश्व की सभी घाटियों में रबसे सुन्दर है।

इसी सुन्दर हिमालयाई घाटी कश्मीर में प्रसिद्ध अमरनाथ तीर्थ स्थित है। यह तीर्थ कश्मीर के उत्तर में गाशब्रोर पहाडी श्रंखला में स्थित है। भृंगी संहिता में इस पर्वत-माला को 'प्रकाश भटारिक कहा गया है। इस पर्वतमाला की औसत ऊंचाई

समुद्रतल से 5100 मीटर है।

कश्मीर के शैवदर्शन में शिव प्रकाश को कहते हैं और उसकी शक्ति को विमर्श कहते हैं। अमरेश्वर महात्मय के अतिरिक्त इस पावन तीर्थ के बारे में नीलमत पुराण में भी विस्तार से लिखा गया है। नीलमत पुराण का समय ईसा से दो सौ वर्ष पहले का है। नीलमत पुराण में कहा गया है :

''अमरनाथ गुफा के सामने बह रही अमरगंगा में जो भक्त नहायेगा, उसको सौ गौदानों का फल प्राप्त होगा।''

इस पुराण में इस तीर्थ का विस्तृत उल्लेख है।

अमरनाथ पर्वत माला में कई सुन्दर औलोकिक सरोवर हैं, जैसे तारसर, मारसर, चन्द्रसर कोहलाई सर और शेषनाग सरोवर।

1980 में स्वीडन की गुफ़ाबाज़ी टोली ने इस बात की पुष्टि की कि अमरनाथ स्वामी की गुफ़ा में लोगों का आना जाना ईसा पूर्व ३ हज़ार वर्ष भी रहा है। कश्मीर के विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथों एवं पुराणों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होजाती है कि अमरनाथ स्वामी की यात्रा पाँच हज़ार वर्ष

पुरानी है। हां यह बात सत्य है कि इस दौरान कई बार भूकम्प, हिमपात और भूस्खलन के कारण रास्तों में बदलाव आता रहा होगा।

कश्मीर के सुल्तान ज़ैनउल आबदीन के दरबारी इतिहासकार जोनराज ने अपनी राजतरंगनि में लिखा है :

''सुलतान ज़ैनउल आबदीन मार्तण्ड के प्रसिद्ध करेवे की सींचाई के लिए लिद्धर नदी से एक पहाड़ी नहर निकालकर इस सूखी ज़मीन को सैराब करना चाहते थे। इस बड़ी योजना की सफलता के लिए स्वामी अमरनाथ जी के दरबार में सुलतान ने हाज़िरी दी और फिर नहर की खुदाई का काम शरू करवाया।''

मुग़लों के युग में मुगल सम्राट जल्लाउददीन ने कश्मीर के उस समय के सूबेदार से कश्मीर की कुछ एक खूबियों के बारे में पूछा, तो मिर्ज़ा यूसूफ़ ने कहा :

''विस्मयकारी बात यह है कि कश्मीर में अमरनाथ का बर्फ़ का शिवलिंग शुक्लपक्ष में बढ़ता है और कृष्णपक्ष में घटता है।''

सोल्हवीं शती में निर्गुण शाखा के महान संत गुरू नानक

देव जी ने भी स्वामी अमरनाथ जी की तीर्थयात्रा करके इस तीर्थ के महत्व को दर्शाया है।

मुगल बादशाह औरंगज़ेब ने 1665 ई. में कश्मीर की यात्रा की। इस दौरे में उनके साथ फ्राँस हकीम बरनियर भी थे। बरनियर ने अपने यात्रावृतांत में स्वामी अमरनाथ की गुफा के भीतर के विस्मयकाटी दृश्यों को बहुत सुन्दरता से बयान किया है। इस लुभवने बयान को पढ़कर अंग्रेज़ी के विख्यात कवि कोलरिज बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने अपनी एक कविता 'कुबला ख़ाँ' में इन दृष्यों को बांधा।

यूरपी पर्यटक विगने ने 1842 ई. में लिखी किताब में अमरनाथ यात्रा का भरपूर ब्योरा दिया है। इन का कहना है कि यह यात्रा इतिहास के पूर्वकाल की है। यात्रा के कई पड़ावों पर ऐतिहासिक खोज परख करने के बाद यह लिखते हैं कि अमरनाथ यात्रा हज़ारों वर्ष पहले भी इसी तरह इन्हीं रास्तों से हुआ करती रही है।

प्रसिद्ध योगी स्वामी विवेकानंद ने भी 1898 ई. में अमरनाथ में शिवलिंग के दर्शन किए। बाद में उन्होंने लिखा कि गुफा में

एक आध्यात्मिक शक्ति ने आकर उन्हें अपने गले लगाया और एक औलोकिक प्रसन्नता का नशा उन पर कई दिन तक बना रहा।

प्रसिद्ध संत स्वामी रामतीर्थ जी ने भी स्वामी अमरनाथ जी की यात्रा की है। उनका कहना है

"बर्फ़ जिसमें सुसती है, जुडता है लाशय

अमरलिंग इस्तादा चेतन की जा है

मिला यार, हुआ सुब फासला तय

यही रूप दायम अमरनाथ का है''

कश्मीर के योगी और शैव दर्शन के ज्ञाता स्वामी विद्याध ार इस गुफ़ा में बैसाख से लेकर कर्तिक तक अपनी साधना में मस्त रहे। यह 1921 ई की बात है। एक अंग्रेज़ यात्री विलियन हिंटर ने इसका ज़िक्र दैनिक ट्रिब्यून (दिल्ली) में किया है।

स्वामी रामदासजी ने भी इस गुफ़ा में लगातार इक्कीस दिन तक पूजा की है।

छड़ी मुबारक भगवान शिव की महिमा का प्रतीक है।

इस के साथ शिव भक्तों की आस्ता जुड़ी है। शिवभक्तिों के जत्थे की अगुवाई भी इसी छड़ी मुबारक द्वारा होती है जो विशेष पूजा अर्चना के बाद अमरनाथ के लिए प्रस्थान करती है। आजकल छड़ी मुबारक की पूजा श्रीनगर के दशनामी अखाड़े में होती है। यह पूजा सावन महीने के शक्लपक्ष की तीसरी या चौथी तिथि को होती रही है। पर अब इस में परिवर्तन आ चुका है। छड़ी मुबारक की पूजा के पश्चात इसे लेकर यात्री अमरनाथ के लिए निकल पड़ते हैं। पहले सारी यात्रा पैदल चलकर पूरी होती थी। इसलिए कई पड़ावों में इसे बांटकर चलते थे। अब दो रास्तों से अमरनाथ यात्रा होती है। एक पुराना रास्ता पहलगांव से सुन्दर पहाड़ी मार्गों से होते हुए गुफ़ा तक जाता है। इस रास्ते में कई औलौकिक सुन्दरता के परिपूर्ण स्थान है, जैसे चंदनवाड़ी की घाटी, शेषनाग की पावन एवं मनमोहिनी झील और दिव्य शक्तियों एवं पांच नदियों की घाटी पंचतरनी।

अमरेश्वर महात्मय के अनुसार:

"कुस्क्षेत्र, प्रयाग और गंगा के तीर्थों पर नहाने से जो फल

मिलता है, उतना ही फल अमरनाथ तीर्थ के पंचतरनी में नहाने से मिलता है।''

दूसरा रास्ता सोनमर्ग बालतल से अमरनाथ गुफ़ा तक जाता है।

सावन शुक्ल पक्ष की आधी रात बीत जाने पर अमरनाथ का मुख्य दर्शन होता है। सबसे पहले छड़ी मुबारक और पीछे पीछे असंख्य यात्रीयों का कारवाँ अमरनाथ स्वामी के जयकारों के साथ गुफ़ा में प्रविष्ट होता है और हिमशिवलिंग की पूजा अर्चना होती है।

अमरनाथ का यह पहाड़ खड़िया चट्टानों का है। गुफ़ा का मुंह वर्गाकार 150 फुट है। पथरीले छत से पानी की टप-टप बराबर होती रहती है। सिर्फ पूर्व दक्षिणी कोने पर पानी की बूंदे जमकर हिमलिंग बनाती है। छड़ी मुबारक में गुफ़ा के जाने से पहले कबूतरों की एक जोडी आसमान में उड़ान भरती है।

स्वामी अमरनाथ जी की यह यात्रा यथार्थ में जीते जी अमर होने की यात्रा है।

———⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘———
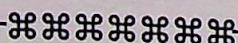
श्रीनगर: एक परिचय

डॉ. दरख़्शां अंदराबी

श्रीनगर कश्मीर का सबसे बड़ा नगर है। यहाँ की संस्कृति और अर्थव्यवस्था के हवाले से महत्वपूर्ण। इस नगर का इतिहास तीन हज़ार वर्ष का है। इस नगर ने कई साम्राज्य बनते और मिटते देखे। यह नगर कई कई बार तबाह हुआ और कई बार इसका पुननिमार्ण हुआ। ह्यून साँग छठी शती ईस्वी में श्रीनगर आया और अपनी पुस्तक में उसने इस शहर की खूब प्रशंसा की। यहाँ के भुगोल के अतिरिक्त वह यहाँ की संस्कृति और वास्तुकलाओं और ललित कलाओं से बहुत प्रभावित हुआ। अपने सफ़रनामे में ह्युन साँग ने इसे 'प्रवरपुर' कहा है। लिखते हैं :

"जहाँ प्रकृति अपने कमाल पर है वहीं प्रवरपुर का नगर बसा है।"

कल्हण ने श्रीनगर को लक्ष्मी देवी का शहर कहा है। कल्हण ने इस शहर का बखान करते हुए लिखा है :

"छोटी-छोटी जलधारायें घरों के परिसरों और बाज़ारों से अठखेलियाँ करती हुई निर्मल और सुन्दर झील की गोद में उतर जाती हैं।''

कल्हण एक और जगह लिखते हैं :

"नगर में आकाश को छूते भवन हर ओर दिखते हैं। अधिकतर मकान लकड़ी के बने हैं।''

श्रीनगर का गुणगान यहां आने वाले हर इतिहासकार और सैलानी ने किया। अॅबुल फ़ज़ल हों, फाँसिस्को पलर्स्ट, फ़ादर ज़ेवियर हों, जहाँगीर हों, बरनियर हों या बुल्हर हों। अबुल फ़ज़ल लिखते हैं :

"लकड़ी के पाँच या छः मंज़िला भवनों के छतों पर तरह तरह के फूल उगाये जाते हैं। रँगा रँग फूलों के यह चमन आँखों को सुकून देते हैं।''

फ्राँसिस्को पलर्स्ट जहाँगीर के शासनकाल के दौरान कश्मीर आये और श्रीनगर के बारे में अपने यात्रावृतांत में कहा:

"यह शहर बहुत बड़ा है और खुशहाल भी। यहाँ कई मस्जिदें और मंदिर हैं। चीड़ और देवदार की लकड़ी से बने घर और अन्य निर्माण अति सुन्दर हैं। खिड़कियों पर शीशों की

जगह लकड़ी की पिंजराकारी अदभुत है। बरनियर ने श्रीनगर को "पैराडाईज़ आफ़ इन्ड़ीज़" कहा है।

यूरोपियों ने इसे "वेनिस आफ ईस्ट" कहा है। बुल्हर डूबते सूरज में ज़बरवन पहाड़ी के नज़ारे से प्रभावित थे, इसी पहाड़ी के दामन में है निर्मल पानी की डल झील जैसें सोने की अंगूठी में जड़ा हुआ बहुमूल्य नगीना। डल झील के बारे में कई लोगों ने अपने अपने अंदाज़ से कहा और लिखा। शायर डाक्टर मुहम्मद इक़बाल ने अपने ख़यालात को यूँ जुबान दी:

"कोह-ओ दरिया-ओ गुरूबे आफ़ताब
मन खुदा दीदम ईं जा बेहिजाब"

महाराजा अशोक ने ईसा पूर्व दो हज़ार वर्ष ज़बरवन या शंकराचार्य पहाड़ी के ईद गिर्द और पान्द्रेठन से खोनमूह तक इस शहर को बसाया और इसका नाम रखा 'श्रीनगरी' यानी 'भाग्य का शहर'। अशोक के बाद के राजाओं ने इस नगर का विस्तार शालीमार और हारवन तक किया। हारवन का पुराना नाम था 'शुद्धहार्दवन'। इसी जगह पर पहली शती में बौद्ध विधवानों का पहला विश्व सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन में लिए गए निर्णयों को तांबे की बड़ी बड़ी तखतियों पर खुदवाकर

लिखा गया था और वहीं हारवन में ही उन्हें दफ़न किया गया था। यह तांबे के तखते आज भी हारवन में ही कहीं पर दफ़न हैं। पाँचवी शती ईस्वी में श्रीनगर के नये शहर की नींव हारिपर्वत के आस पास डाली गई। हारिपर्वत को तब प्रद्युम्नगिरि कहा जाता था। तब भी आज ही की तरह यह तीर्थस्थल था और यहाँ लोग दूर दूर से आते थे। राजा प्रवरसेन ने यहाँ एक सुन्दर नगर बसाया। हुन राजा मेहरकुल ने अपनी विजय यात्रा जारी रखते हुए तेरहवीं शती में जब यहाँ आक्रमण किया तो यह शहर उसने पूरी तरह तबाह कर दिया।

मुस्लमान बादशाहों ने यहाँ कई स्थानों पर बाग़ बनाये और नहरों का विर्मान किया। इससे नगर की सुंदरता में वृद्धि हुई। एक कवि बरबस कह उठा।

"पत्थर की हथेली पे महकता है गुलिस्ताँ"

दुनिया के तीन बड़े धर्म हिन्दु धर्म, बौध धर्म और इस्लाम के आस्था स्थल श्रीनगर के हर इलाके में हैं।

श्रीनगर की सबसे बड़ी जामा मस्जिद का निर्माण हिन्दु, बौध और इस्लामी वास्तु कला का अद्भुत मिश्रण है। श्रीनगर की प्रसिद्ध खानक़ा-ए-मौअल्ला को लीजिए, यह विशुद्ध कश्मीरी

वास्तुकला का उच्च उदाहरण है। यह मुस्लमानों का श्रद्धा केन्द्र है जिसके पास ही गुरूद्वारा गुरुद्वारा छट्टी पादशाही स्थित है। यहाँ की हर दास्तां किसी भी देवमालाई किस्से से अधिक दिलचस्प और जीवन से इतनी निकट है कि इसका हर पन्ना कश्मीर के इतिहास का दर्पण लगता है। इस दास्तां की रंगा रंगी का प्रमाण हमें कभी बुर्ज़हामा में मिले कंकर देते है और कभी हारवन में मिली मिट्टी की टाईलें, कभी दामोदर करेवे के दामन में मिलते है और कभी बढ़शाह के डुमट में । यह इतिहास के सभी संदर्भ यही कहते हैं कि:

"खंडहर बता रहे हैं इमारत अज़ीम थी"

बीते हुए युगों की दास्तां सुना रहा है शंकराचार्य की पहाड़ी पर बना हुआ ज्येष्ठरुध्र का मंदिर। हिन्दुओं के लिए ज्येष्ठरुध्र का आसन और मुस्लमानों के लिए तख्त-ए-सुलेमानी और बौद्धों के लिए एक प्राचीन ऐतिहासिक विहार। श्रीनगर की कहानी ईसा पूर्व दो सौ चौंसठ वर्ष शुरू होती है जब महाराजा अशोक ने छः लाख भवनों का निर्माण करके श्रीनगर को बसाया। यही श्रीनगर फिर आठ सौ साल तक कश्मीर की राजधानी रहा। महाराजा कनिष्क ने जब कश्मीर को अपने

साम्राज्य के साथ जोड़ा तो उन्होंने हारवन के निकट नए शहर का निर्माण किया। इतिहासकार मानते हैं कि इस ज़माने के वास्तु शिल्पियों की धूम चीनी तुर्किस्तान और रोम तक थी।

श्रीनगर के श्री प्रताप सिंह संग्रहालय में प्राचीन काल के ऐतिहासिक अवशेष संभाल कर रखे हुए हैं जो हमें इस नगर की ऐतिहासिक गरिमा के संदर्भ प्रदान करते हैं। श्रीनगर हमेशा ज्ञान की नगरी रहा है। यहाँ विश्व ख्याति के कितने ही कवि, दाशर्निक और इतिहासकार जन्मे हैं। क्षेमेंन्द्र, अभिनवगुप्त, ममट, और कल्हन इसी मिट्टी की उपज हैं। यहीं पर विश्वप्रसिद्ध शिव स्तोत्रों की रचना हुई।

श्रीनगर के बीचों-बीच झेलम नदी बहती है। इस पर कई ऐतिहासिक और नये सेतु बने हैं जो न सिर्फ इस नगर के लोगों को जोड़ते हैं बल्कि कश्मीर के इतिहास के पन्नों को भी।

"जेहलम के किनारों पर इक शहर पुराना है
यह ज्ञान स्थल ऊंचा यह दृष्य सुहाना है''

जेहलम के किनारें पर कई पवित्र धर्म-स्थल हैं। ख़ानकाह-ए-मौला, दरगाह-ए-बुलबुल शाह, ज़ियारत-ए-उवैसी के अतिरिक्त रूप भवानी आश्रम, गदाधर मंदिर और अलखभवानी

के मंदिर जेहलम के किनारों पर शोभित हैं। हरि पर्वत पर जहां एक तरफ़ मखदूम साहेब की दरगाह है वहीं गणपतयार, ज्येष्ठादेवी और श्रीरामचन्द्र के ऐतिहासिक मंदिरों के अतिरिक्त हज़रत नकशबन्द मुश्किलकुशा और पीर दस्तगीर की ज़ियातरगाहें देखने लायक हैं। इमामबाड़ा हसनाबाद और वहां मौजूद काल के अवशेष ज़रूर अपनी और खींचते हैं। यहां पर शिया विद्वानों का मज़ार है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

भारतीय भाषाओं से

जाति

वैरमुन्तु

जातिवाद के पागलो !
खुन चाहिए खून?
ले लीजिये मुझमें से।
छुरी है छुरी?
भोंक दीजिये मेरी आंखों में!
अंगारा है अंगारा ?
चुभो दीजिये मेरे घाव में।
उंडेल चुके अपना क्रोध ?
जल चुका घर!
अब कहिये
यह क्या है ?
पेट और अंतड़ियों के बीच
कुरुक्षेत्र का युद्ध ?

इस मिट्टी पर

पान की थूक भी थूकना

मैं नहीं चाहता।

यों रक्त थूकिये तो कैसे ?

आंख के अन्दर

श्वेत और श्याम का संघर्ष

पलक उतर आकर

आग, लगा दे।

इस देश में

चूल्हों तक भी

आग अभी नहीं पहुंची है।

उसके पहले छप्पर को ?

विस्तृत करने को कहा

मन को

न कि शमशान को ?

यह जाति की छुरी

तैयार हुई है

आत्महत्या की भट्टी में।
दो काम हैं इस छुरी के
सामने वाले का नाश
और चलानेवाले का भी।
फेंकिये
दूर फेंक डालिये
जनसंख्या की अपेक्षा
लाशों की संख़्या बढ़ जाय तो
जाति संख़्या का क्या हो ?

जाति एक माया है।
कौन-सा रसायन
जाति का रंग परखा देगा ?
कौन-सा विज्ञान
जाति का गुण दिखा देगा ?
''अब आवश्यकता है
आमुक जाति के रक्त की''
ऐसा विज्ञापन निकला है कभी?

"अमुक जाति का चावल
यहाँ प्राप्त होगा ....''
ऐसा लिखा देखा है
किसी दूकान के पट्टे पर!
बताइये तो सही।
मैं लज्जा में पडा हूँ
दुख से रो रहा हूँ।
आकाश को भेदकर
ज्ञान का अरूणोदय लाने को
उद्यत हैं संसार के बुद्धिजीवी।
हम तो धरती को छेदते
कीड़े हैं कीड़े ....

जगभर के बुद्धिजीवी
सब के लिए पंख बना उड़ने की सोच रहे हैं
और हम अपने कपड़े तक
खो चुके हैं

यहाँ सभी जातियां विद्यमान हैं
जो एक जाति अलभय है
वह है मानवजाति

और मशाले वाहियें
जाति का शव जलाने के लिये
और भी हथियार चाहियें
जातियता की
जड़ उखाड़ने के लिये।
अभी तक के लिये
एक श्वेत कबूतर की मांग है।
भारत की सब दिशाओं में
उड़ने के लिये।

.............हिन्दी अनुवाद : सतीश विमल

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

कन्नड़ कविता

लिखता ही रहा हूं

सिद्धालिंग देसाई

इतने बड़े प्रांगण में मैं अकेला रहता था
मेरे साथ कोई नहीं, न खिलौने
ना ही खेलने की उम्र।
तब मेरा साथी केवल उदासी
एक दिन इस उदासी-महाराज को
घर से बाहर करने के लिए, प्रांगण से गली को आया
गाँव, जंगल, नगर घूमता रहा
वहाँ मूर्खों की मूर्खता, बुद्धिमानों की नीचता,
महत्वाकांक्षियों का अनुकूल सिंधु तत्वज्ञान,
राजनीतिज्ञों से भी ख़तरनाक
अकेडेमीशियनों की राजनीति देखी
ऐसे ही बहुत जगह घूमा
कहीं कुछ क्रिया-पद मिले

घर आया जब सोत-सोते छत देखी तो

बहुत से नामपद मिले

कुछ दिनों के बाद

यह क्रिया-पद नाम पद के साथ जुड़कर

भूखी दृष्टि से मेरी तरफ देख रहे थे

तब मुझे लगा कि यहाँ कुछ विशेषणों की कमी है।

एक दिन घर में

मिट्‌टी से मुह बन्द घड़े को खोलता हूँ तो

सारी ज़िन्दगी

जितने विशेषण चाहिएं थे, वह सब मिल गये

तब से लिखने लगा

अभी तक लिख रहा हूँ

...............अनुवादः डा. एजासुदीन फैरोज़

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

असमिया कविता

कविता

हीरेन भट्टाचार्य

मेरी कलम लोहार के हाथ का हथौड़ा,

ठोंक-पीट कर बनाता हूँ शब्द

किसान के फाल जैसा पैना;

हलरेखा में सोने की सीता,

बढ़ई की आरी-सी क्रूर;

सख़्त लकड़ी के रेशे चीर कर लाता हूँ खींच

अनुभव के खून से रंगे हुए शब्द,

चाउँताल मर्द के धनुषबाण सा

लक्ष्यभेदी एक-एक शब्द

मेरे रक्त मांस की इच्छा में तीव्र हो उठता,

उन में से कोई पर्वत-सा उद्धत

कोई नदी सा नत

कोई झील सा गंभीर

किसी के कहने पर उठता-बैठता नहीं,

नदी-नदी, पर्वत-पर्वत विपुल महादेश का मैं कवि

पृथवी मेरी कविता

........अनुवाद : पापोरी गोस्वामी एवं अरुण कमल

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

तेलुगु लेख

आँध्र प्रदेश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पी. वी. नरसा रेड्डी

आज भारत में लगभग 80 करोड़ से अधिक लोग निवास करते हैं। पर वे न तो एक ही जाति या नस्ल के हैं और न उनकी भाषा एक ही है। भारतीय प्रकृति और जलवायु की विविधताओं और विभिन्नताओं के अनुसार यहाँ के निवासियों में भी विविधता है। इसमें विभिन्न प्रजातियों या नस्लों का समन्वय है।

मोटे तौर पर भारत की विभिन्न भाषाओं, धर्म, सामाजिक-व्यवस्था, रीति-रिवाज, खान-पान आदि में भिन्नतायें अवश्य पाई जाती हैं। लेकिन बारीकी से अध्ययन करने से ऐसा स्पष्ट हो जाता हैं कि सभी भारतीय एक ही संस्कृति के विभिन्न

रूप हैं। भाषा, जाति, धर्म, व्यवस्था, व्यापार, जीवन-यापन आदि महत्वपूर्ण अंगों पर पारस्परिक प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हैं। इन्हीं कारणों से भारत की मौलिक एकता अखण्ड है।

आज भारत अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तनावों से जूझ रहा हैं। भाषा, धर्म, जाति, प्रांत के नाम पर अनेक राजनीतिक षड़यन्त्र भी चल रहे हैं। इन परिस्थितियों में एक प्रदेशवासी दूसरे प्रदेश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से अवगत होना चाहिये, जिससे एक दूसरे के प्रति भाईचारे की भावना पनप उठती है।

आंध्र प्रदेश एक ऐसा राज्य है जिसकी अपनी अलग भाषा, साहित्य, इतिहास, सामाजिक एवं राजतीतिक पृष्ठभूमि है। इसके अध्ययन से हमें यह ज्ञात हो जाता है कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक- धाराओं में से यह एक अंग मात्र है। इस राज्य के सामाजिक, सांस्कृतिक निर्माण में विभिन्न भारतीय महापूरूषों, धर्मों और आन्दोलनों का प्रभाव भी परिलक्षित है। इसी प्रकार राष्ट्रीय संस्कृति, साहित्य एवं राष्ट्रीय जागरण में तेलुगु भाषियों का अंशदान कम महत्वपूर्ण नहीं है।

आंध्र प्रदेश दक्षिण भारत में स्थित एक ऐसा राज्य है जिसे उत्तर और दक्षिण का संगम कहा जा सकता है। भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से आंध्र प्रदेश अन्य दाक्षिणात्य राज्यों की तुलना में उत्तर भारत से बहुत नजदीक है। आंध्र प्रदेश की पूर्वी सीमा बंगाल की खाड़ी से लगी हुई हैं। इस प्रकार मद्रास से लेकर गोपालापुरम तक सागर तट लगा हुआ है जिसकी लम्बाई एक हजार किलोमीटर है। आंध्र प्रदेश के उत्तर-पश्चिम की दिशा में उड़िसा राज्य, उतरी भाग में मध्य प्रदेश, पश्चिमी दिशा में महाराष्ट्र और दक्षिण की दिशा में कर्नाटक एवं तमिलनाडु राज्य उपस्थित है।

आंध्र प्रदेश उत्तर में 12-14 अक्षांश से लेकर दक्षिण में 19-34 अक्षांश और पूर्व में 77-50 देशांतर से लेकर 84-50 देशांतर के बीच स्थित महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान राज्यों के बाद पांचवा स्थान ग्रहण करता है। आज़ादी के बाद पहली अक्तूबर, 1953 को तेलुगु भाषी जनता का 'आंध्र' नाम से एक नया राज्य बना। इसमे मद्रास राज्य के श्रीका कुलम, विशाखापट्टनम, पूर्वी गोदावरी, पश्चिमी गोदावरी, कृष्णा, गुण्टूर,

नेल्लूर, अनन्तपुर, कडपा, कर्नूल, चितूर तथा बल्लारी ज़िले के तीन ताल्लुक शामिल किये गये। पहली नवम्बर 1956 में राज्य के पुनर्गठन के फलस्वरूप हैदराबाद के आदिलाबाद, वारंगल, करीमनगर, निज़ामाबाद, मेदक, हैदराबाद, नलगोंड़ा, खम्मम तथा महबूब नगर ज़िले जो कि पहले तेलंगाना क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध थे, आंध्र प्रदेश में शामिल हो गये। भाषा के आधार पर राज्यों का बंटवारा सबसे पहले आंध्र प्रदेश के साथ ही आरम्भ हुआ।

आंकड़ों के अनुसार आंध्र प्रदेश की आबादी भारत की आबादी में से 7.82 फीसदी है। इस राज्य में 86 प्रतिशत लोग हिन्दू धर्मावलम्बी हैं, 8 प्रतिशत मुसलमान और 4 प्रतिशत ईसाई लोग हैं। 86 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा तेलुगु है। भारत में हिन्दी भाषियों के बाद तेलुगु भाषियों की संख्या द्वितीय स्थान ग्रहण करती है।

आंध्र शब्द आंध्र प्रदेश और आंध्र जनता दोनो का परिचायक है। 'अन्ध्र' शब्द ही प्राचीन रूप है। आंध्र अनन्तर का विकसित रूप है। ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में आंध्र शब्द

का प्रथम प्रयोग जातिपरक अर्थ में हुआ है। तेलुगु शब्द आजकल आंध्र का पर्यायवाची हो गया है। दसवीं शताब्दी के पहले के शिलालेखों में तेलुगु शुब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। आदिकवि नन्नय भट्ट के काल से (11वीं शती ई.) आंध्र और तेलुगु पर्यायवाची हो गये हैं। इन दोनों शब्दों से देश एवं भाषा का बोध होता है।

कुछ विद्वानों की धारणा है कि तेलुगु संस्कृत से विकसित कोई अर्वाचीन प्राकृत है। पर यह धारणा भाषाशास्त्र के नियमों के अनुकूल नहीं है। तेलुगु द्रविड़-परिवार की भाषा है, इसमें कोई संदेह नहीं है। यह मध्य द्राविड़ वर्ग के अंतर्गत है। तेलुगु के 40 प्रतिशत शब्द संस्कृत तत्सम है, दस प्रतिशत उर्दू अंग्रजी, फ्रेंच, पुर्तगाली और अन्य मिश्रित बोलियों के हैं। तेलुगु भाषा में संस्कृत शब्दों की बहुलता के कारण वह द्रविड़ और आर्य भाषाओं के योग से एक विलक्षण अभिव्यक्ति से संवलित है। यह कदाचित् भारत की सभी भाषाओं में तेलुगु को विशिष्ट बना देती है। तेलुगु अजंत भाषा है, उच्चारण के माधुर्य के कारण प्राच्यदेश की इटली भाषा कही गई है। प्रमुख

विदेशी विद्वान जे. बी. एस. हालडन ने कहा कि भारत की समस्त भाषाओं में तेलुगु ही एसी भाषा है जो आधुनिक वैज्ञानिक विचारों को व्यक्त करने में अधिक सक्षम है। तेलुगु में आर्य और द्रविड़ दोनों परिवारों की भाषाओं एवं साहित्यों की परम्परायें विद्यमान है। इसमें एक रीति 'मार्गी' कहलाती है, जो संस्कृत की है। दूसरी रीति 'देशी' है, जो द्रविड़ों की है। यही नहीं, आंध्र आर्य शब्द का है तो तेलुगु देशी शब्द का। यों तेलुगु एक संश्लिष्ट भाषा है। तेलुगु की अपनी लिपि भी है।

आंध्र प्रदेश को ऐतिहासिक एवं राजनीतिक दृष्टि से तीन इकाइयों में विभाजित किया जा सकता है : 1) बंगाल की खाड़ी से लगे नौ ज़िले जिन्हें तटवर्ती ज़िले (कोस्टल डिस्ट्रिक्टस) या तेलुगु में 'कोसता जिल्लालु' कहते हैं। वे इस प्रकार है: श्रीकाकुलम, विजयनगरम, विशाखापट्टनम, पूर्वी गोदावरी, पश्चिमी गोदावरी, कृष्णा, गुण्टूर, प्रकाशम और नेल्लूर। 2) तेलंगाना प्रांत के दस ज़िले: हैदराबाद, रंगारेड्डी, नलगोण्डा, महबूबनगर, खम्मम, वरंगल, करीमनगर, निज़ामाबाद, मेदक और आदिलाबाद। 3) रायलसीमा के चार ज़िले : कडपा, कर्नूल, अनन्तपुर और

चित्तूर। इस प्रकार आंध्र प्रदेश में कुल 23 जिले है। भौगोलिकता की दृष्टि से आंध्र प्रदेश पाँच अन्य भाषी राज्यों से घिरे रहने के कारण यहाँ के सीमावर्ती प्रांतों के लोग तेलुगु भाषा के अलावा उड़िया, हिन्दी, मराठी, कन्नड़ और तमिल भाषायें बोलते हैं।

आंध्र प्रदेश राज्य दक्षिण भारत के भूभाग में पर्याप्त मात्रा में व्याप्त है। प्राचीन काल में दक्षिण का अधिकांश भूभाग मौर्य राजाओं के शासन के अधीन रहा था। चन्द्रगुप्त मौर्य (इ. पू. 322-297) के शासन काल में पधारे विदेश यात्री मेगस्टनीस ने भी आंध्र राजाओं के बल-पराक्रम का वर्णन किया है। गोदावरी तट पर आंध्र राजाओं के साम्राजय के अस्तित्व के बारे में बौद्ध धर्म की रचनाओं में भी उल्लेख है। राजा अशोक ने भी अपने तेरहवें वें शिलालेख में आंध्र राज्य को अपने अधीनस्त बताया था।

मौर्य वंश के पतन होते ही आंध्र वंश के शातवाहन या सातवाहन राजाओं ने ई. पू. तीसरी सदी से प्रस्तुत आंध्र प्रदेश के अधिकांश भूभाग पर 400 साल तक शासन किया था। शातवाहन राजाओं में सबसे शक्तिशाली राजा गौतमीपुत्र शातकर्णी

जो अपने वंश का २३वां राजा था। उन्होंने सन् 62 से लेकर 86 तक शासन किया था। इस वंश का शासन काल सन् 227 तक समाप्त हो जाता है। शातवाहन वंश के 17वें राजा हाल ने प्राकृत भाषा में 'गाथा सप्तशति' नामक बृहत पद्य-रचना की थी। हाल राजा के मन्त्री गुणाढ्य ने "बृहत कथा मंजरी" नामक कहानी संकलन की रचना प्राकृत भाषा में की थी।

सातवाहन राजाओं के समय में आंध्र प्रदेश सभी दृष्टियों से समृद्ध था। तत्कालीन शासन में ब्राह्मण और बौद्ध धर्मों को समान आदर प्राप्त था। इस वंश के अन्तिम राजाओं में यज्ञश्री शातकर्णी विशेष प्रसिद्ध हुये हैं। इनके शिलालेख नासिक, कार्ली, चिनगंजाम आदि प्रदेशों में प्राप्त हुये। इनका साम्राज्य सुदूर दक्षिण में स्थित कड़लूर से लेकर उत्तर में मालव राज्य तक व्याप्त था। महायान शाखा के प्रवर्तक आचार्य नागार्जुन इन्हीं के समय में हुये थे, जो आंध्र के ही निवासी थे। यज्ञश्री शातकर्णी (ई. सन् 172-205) ने आचार्य नागार्जुन के लिये एक संघाराम का भी निर्माण कराया था। इनके सिक्कों में नौकायें चित्रित हैं। इन्होंने ईजिप्ट, रोम, ग्रीक, इरान, सिंहलद्वीप,

जावा, सुमात्रा, बोर्नियों, यव, चीन और बर्मा देशों के साथ समुद्र मार्ग पर वाणिज्य-सम्बन्ध स्थापित किया था।

उस समय की राजभाषा प्राकृत थी। गुहालयों का खूब निर्माण हुआ। अजन्ता का चित्र लेखन इसी समय का है। अमरावती का विश्व-विख्यात बौद्ध-स्तूप भी इसी समय में निर्मित हुआ है। सातवाहन राजाओं के बाद आन्ध्र देश एक ही राजा के शासन में नहीं रहा। सातवाहनों के सामन्तों ने स्वतन्त्र हो अपने-अपने अलग राज्य स्थापित किये जिनमें इक्ष्वाकु वंशज उल्लेखनीय हैं।

इक्ष्वाकु वंशियों ने विजयपुरी को राजधानी बनाकर अपना शासन प्रारम्भ किया था। विजयपुरी के पास ही श्रीपर्वत है, वहीं आचार्य नागार्जुन रहते थे। कालान्तर में श्रीपर्वत ही नागार्जुन कोण्डा (पर्वत) कहलाया। नागार्जुन के पाण्डित्य की कोर्ति चारों ओर व्याप्त हो गई। चीन, सिंहल आदि देशों के भिक्षु उनके उपदेश सुनने आते थे। इसीलिये नागर्जुन कोण्डा में बड़े-बड़े भवन बनाये गये। इस प्रकार शिल्पकला की अच्छी उन्नति हुई।

इक्ष्वाकु वंश के पश्चात् पल्लवों और विष्णुकुण्डिन वंश के राजाओं ने राज्य किया। पल्लवों की राजधानी सुदूर दक्षिण कांचीपुरम थी। इतिहासकारों ने पल्लवों का सम्बन्ध पलनाडु (आज के गुण्टूर जिला में) से जोड़ा है। विण्णुकुण्डिन गुण्टूर जिले में स्थित विनुकोण्डा के निवारी थे। इसी युग में आन्ध्र में बौद्धों का प्रभाव समाप्त हुआ।

७वीं सदी के प्रारम्भ में महाराष्ट्र में बादामी नामक नगर में सत्याश्रय पुलकेशी ने चालुक्य शासन की नींव डाली। धीरे धीरे पूर्व की ओर चालुक्यों का राज्य बढ़ने लगा। विष्णुवर्धन चालुक्य ने आन्ध्र देश में चालुक्य राज्य स्थापित किया। सातवाहनों के पश्चात् चालुक्यों के समय में ही आन्ध्र में (सन् 625 से 1070 तक) स्थाई शासन स्थापित हुआ था। चालुक्य राजाओं ने अपने शिला लेखों में संस्कृत और प्राकृत के स्थान पर तेलुगु का प्रयोग प्रारम्भ किया। आन्ध्र में चालुक्यों की राजध ानी पहले पहल पिठापुरम में स्थापित हुई, किंतु वहां से वेंगी और फिर राजमहेंन्द्रवरम में स्थपित हुई।

चालुक्य राजाओं के शासन काल में तेलुगु भाषा एवं

साहित्य का विशेष रूप से विकास हुआ है। चालुक्य नरेश राजराज नरेन्द्र ने (1011 ई–1027) आदि तेलुगु कवि नन्नय भट्ट से संस्कृत महाभारत को तेलुगू में अनुवाद करने की प्रार्थना की थी। इस प्रकार चांलुक्य राजाओं के शासन काल में आन्ध्र साहित्य की उल्लेखनीय प्रगति हुई है। चालुक्य वंश राजाओं की समाप्ति के बाद काकतीय वंश राजाओं ने तीन सौ वर्षों तक (सन् 1000 से 1322 तक) आन्ध्र राज्य पर शासन किया।

काकतीय राजाओं में गणपति देव (1198-1261) अत्यंत पराक्रम-शाली थे। इनके समय में राज्य-विस्तार के साथ साहित्य, चित्रकला तथा शिल्पकला की आशातीत उन्नति हुई। शिव भक्ति का अच्छा प्रचार हुआ। राजा गणपति देव की पुत्री राणी रुद्रमदेवी ने अनेक वर्ष शासन किया। किन्तु सन् 1322 में अल्लाउद्दीन के प्रतिनिधि मुहम्मद-बिन-तुगलक ने काकतीय नरेशों को पराजित किया। काकतीय राजाओं ने उत्तर में कलिंग से लेकर दक्षिण में कान्जीपुरम तक एक सुविशाल भूभाग पर शासन किया।

काकतीय साम्राज्य के पतन के बाद विशाल आंध्र साम्राज्य

असंख्य छोटे-मोटे सामन्त राजाओं के अधीन हो गया था। उधर तेलंगाना प्रांत में मुसलमानों का शासन चल रहा था।, परन्तु समुद्र-तटवर्ती जिलों में रेड्डी राजाओं ने गुंटूर जिले के अद्दंकी में अपने राज्य की नींव डाली। इन्होंने अनेक सुदृढ दुर्गों का निर्माण करके राज्य को सब तरह से मज़बूत किया। रेड्डी राजा साहित्य प्रेमी थे। उन्होंने साहित्यकारों का पोषण ही नहीं किया, अपितु खुद रचनायें भी कीं। राजा कुमार गिरि रेड्डी (सन् 1382-1400) संस्कृत के प्रकाण्ड पंड़ित थे। इन्होंने संस्कृत में 'वसंत राजकीयम' नाम से नाट्य शास्त्र की रचना की है। श्रीनाथ महाकवि ने रेड्डी राजाओं तथा उनके मन्त्रियों को अपनी अधिकांश कृतियां समर्पित की हैं। वेमना कवि भी इसी समय के माने जाते हैं। इनकी तुलना हिन्दी के कवि कबीरदास से की जाती है। रेड्डी राज्य ने सभी क्षत्रों में अपना वैभव दिखाया, परन्तु सन् 1450 में इस साम्राज्य का अस्त हो गया।

दक्षिण के इतिहास में विजयनगर साम्राज्य की बड़ी प्रशस्ति हुई है। हरिहर तथा बुक्कराय के समय पुर्तगालवासी

गोलकोण्डा के नवाबों में कुली कुतुब शाह प्रथम हैं। इन्होंने सन् 1512 से 1543 तक राज्य किया। आंध्र का पूरा प्रांत इनके अधीन नहीं था, तेलंगाना प्रान्त अवश्य था। इस वंश के तीसरे नवाब इब्राहिम ने विजयनगर के पतन में हाथ बंटाया था। इन्होंने सन् 1550 से 1580 तक राज्य किया। नवाब इब्राहिम ने तेलुगु साहित्य एवं तेलुगु कवियों को भी खूब प्रोतसाहित किया। इनके पुत्र मुहम्मद कुतुब ने हैदराबाद (आंध्र प्रदेश का राजधानी नगर) का निर्माण किया था। मुहम्मद के पुत्र अब्दुल हसन ने रायलसीमा जिलों को भी अपने राज्य में मिला लिया। इस वंश के अन्तिम नवाबों में अब्दुल हसन कुतुब शाह थे। ये तानीशा नाम से भी प्रसिद्ध थे। इन्होंने ही रामभक्त कवि और भद्राचल मन्दिर के निर्माता सन्त रामदास को जेलखाने में बन्द किया।

सन् 1687 में औरंगजेब ने गोलकोंण्डा पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार आंध्र देश कुछ वर्ष मुगलों के अधीन हो गया। लेकिन दिल्ली बादशाह के प्रतिनिधि असफजा सन् 1725 में स्वतन्त्र बन बैठा। उनके पुत्रों के आपसी कलह के कारण

वास्कोडिगामा यहाँ आया था। न्यूनिज नामक पुर्तगीज ने विजयनगर का बड़ा सुन्दर चित्रण किया है। सन् 1336 से 1480 तक विजयनगर पर संगम वंश ने राज्य किया। उसके अनन्तर सन् 1480 से 1550 तक सालुव वंश ने राज्य किया। सन् 1480 के पूर्व ही मैसूर, तेलंगाना, राजमहेन्द्रवरम आदि प्रांत इस राज्य के अधीन हो गये थे। तुलुव वंश के राजाओं में श्रीकृष्णदेवराय अत्यन्त विख्यात हुये हैं। तेलूगु साहित्य में इनका समय स्वर्णयुग माना जाता है। कृष्णदेवराय ने दिग्विजय यात्रा करके दक्षिणापथ के अधिकांश भूभाग को अपने शासन के अन्तर्गत ले लिया था। इन्होंने अष्टदिग्गज नाम से आठ तेलुगु महाकवियों को अपने दरबार में स्थान दिया था। इनका सभी-भवन 'भुवन विजय' नाम से विख्यात था। विदेशों के साथ खूब व्यापार होता था। इनके समय में कलाओं को पूरा प्रोत्साहन मिला। श्रीकृष्णदेवराय में धार्मिक सहिष्णुता थी किंतु उनके उत्तराधिकारी बड़े कट्टर थे। अतः धार्मिक विद्वेष के कारण सभी इस्लामी राज्य एक हो गये और विजयनगर राज्य का पतन तालिकोटा के युद्ध में हो गया।

फ्रान्स वालों ने आंध्र के समुद्र तटवर्ती ६ जिलों को हड़प लिया। परंतु अंग्रजों ने फ्रांसीसियों को पराजित कर उन जिलों पर अपना अधिकार कर लिया। ब्रिटेनवालों ने आसफजा निजाम की रक्षा करने का आश्वासन दिया और इस कार्य में लगी अपने फौजीं खर्च के मद्देनज़र रायलसीमा जिलों को निज़ाम ने ब्रिटेनवालों को समर्पित किया। इस प्रकार आंध्र के ग्यारह ज़िलें अंग्रेजों के अधीन तथा तेलंगाना के नौ ज़िले हैंदराबाद निज़ाम के शासन में विभक्त हो गये।

अंग्रेजों के शासन काल में ही तेलुगु भाषियों ने अलग राज्य के लिये माँग की। बापटला में सन् 1913 में आयोजित आंध्र महासभा अधिवेशन में अलग आंध्र राज्य की नींव डाली गयी। इस समस्या को हल करने के लिये सन् 1947 में थार कमीशन की नियुक्ति हुई। भारत के स्वतन्त्र होने पर सन् 1947 में भी आंध्र के ग्यारह ज़िले मद्रास राज्य के अधीन रह गये। अलग आंध्र राज्य के लिये अनेक आन्दोलन चल पड़े। सरकारी और गैर सरकारी समितियों ने अपने-अपने प्रतिवेदन केन्द्र सरकार को प्रस्तुत किये। लेकिन अलग राज्य के बंटवारे

में विलम्ब होते देख सन् 1952 में श्री पोट्टि श्रीरामुलु ने ५२ दिन तक आमरण अनशन करके अपने प्राणों की आहुति दी। बाद में पं. जवाहरलाल नेहरू ने मद्रास के ग्यारह तेलुगु भाषी ज़िलों को अलग कर आंध्र राज्य की घोषणा की। इस प्रकार नवम्बर 1953 को मद्रास राज्य से आंध्र राज्य का विभाजन हुआ। किन्तु तेलुगु भाषी प्रांत तेलंगाना के नौ ज़िले हैदराबाद में रह गये। आखिर भाषा के आधार पर पहली तारीख नवम्बर 1956 को दोनों तेलुगू भाषी क्षेत्रों को मिलाकर आंध्र प्रदेश राज्य का निर्माण किया गया। इस प्रकार तेलुगु भाषियों के अनवरत संधर्ष के बाद एक सुविशाल एवं सुसम्पत्र आंध्र प्रदेश की स्थापना हुई है।

वस्तुः किसी राष्ट्र या राज्य का आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास या पतन केवल कुछ व्यक्यियों के प्रयत्न मात्र से सम्भव नहीं हो जाता। राजनीतिज्ञ, सन्त, समाज-सुधारक, राष्ट्र-सेवी आदि प्रतिनिधि मात्र हैं जो समय और प्रवाह को साथ लेकर चलते हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति तक हमें हजारों वर्ष विदोशियों के आक्रमण और स्वदेशी सामन्त-राजाओं की आंतरिक

स्पर्धाओं का सामना करना पड़ा। स्वातन्त्रय आन्दोलन के पूर्व से पाश्चात्य शिक्षा, संस्कृति और विदेशी शासन से प्रभावित होकर यहाँ के लोगों ने अनेक सामाजिक, राजनीतिक आन्दोलन चलाये। सामाज-सुधार, धार्मिक सुधार, मानव मूल्यों का सम्मान, शिक्षा की व्याप्ति, आधुनिक साहित्य का निर्माण, नारी विमोचन आदि अनेक आन्दालेन प्रचारित हुये। ये सभी आन्दोलन राष्ट्रीय पुनरुथान के अंग हैं, जिनका प्रभाव सभी राज्यों पर पड़ा और आंध्र प्रदेश इन से अलग नहीं है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘
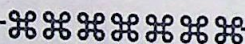
हिंदी कहानी

अपना-अपना अकनंदुन

महाराज कृष्ण संतोषी

कश्मीर में ऐसी कोई मां नहीं होगी जिसने लोक कथा अकनंदुन सुन कर आंसू न बहाए हों। बचपन में कई बार मैंने यह कथा अपनी मां से सुनी होगी। हर बार मां के गाल आंसुओं से भीग जाते थे। एक बार मैंने मां से पूछा भी था-

"मां ! इस कहानी में ऐसा क्या है जो तुम रोती हो?''

"तुम्हारे जब अपने बच्चे होंगे तो स्वयं ही समझ जाओगे'', मां ने सहज होकर उत्तर दिया था। आज मैं दो बच्चों का पिता हूं। बच्चों के प्रति अपने वात्सल्य से मुझे अब इस कहानी की मार्मिकता समझ में आई है।

लोक कथा में बारह वर्षों के बाद जब जोगी आता तो मां उदास होने लगती। उसे यूं लगता जैसे जोगी उससे ही उसका बेटा छीनने आया है। वह उस समय को कोसती जब उसने

जोगी की शर्त स्वीकार कर ली थी। उस समय मां नि:संतान थी और पुत्र के लिए तड़पती थी। जोगी ने मां को पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया था और साथ में एक शर्त भी रखी थी।

"कौन सी शर्त ?'' मां ने पूछा था।

"तुम्हारा पुत्र केवल बारह वर्ष तुम्हारे पास रहेगा ...''

"और उसके बाद ?'' मां के स्वर में कंपन था।

"उस के बाद वह मुझे लौटाना होगा'' मां का चेहरा बुझ सा गया था और पिता का रंग भी उड़ गया था। दोनों ही 'हां' और 'ना' के बीच झूल रहे थे,

'हमें स्वीकार है।' बहुत देर बाद हवा में उन की सहमति का संयुक्त स्वर एक साथ तैर गया था।

मां को अकनंदुन 'गाथा गीत' सुनना बहुत पसन्द था। इसे गुलाम मोहम्मद डार ने अपनी मधुर आवाज़ में गाया था। मां, आए दिन मुझ से रेडियो कश्मीर को फरमाइशी खत लिखने को कहती। जब कभी वह रेडियो से गाना प्रसारित होता, वह सारे काम छोड़ कर उसे तन्यमयता के साथ सुनती। कभी-कभी मैं भी उसके साथ होता। वह उस समय सचमुच ही अकनंदुन

की मां बन जाती और मैं भी अपनी कल्पना में अकनंदुन बन जाता था।

"मां जोगी आया है'' मैं कहता।

"तुम कहीं छिप जाओ अकनंदुन। मैं जोगी से कहूंगी कि तुम अपने ननिहाल गए हो'' मां के स्वर में हड़बड़ी होती।

"वह क्यों मां ?'' मैं आश्चर्य में पूछता।

मैं नहीं बता सकती (अपने आप से) नहीं, नहीं मैं तुम्हें जोगी को नहीं सौंपूंगी।

उधर जोगी गुहार पर गुहार लगाता।

"कहां है अकनंदुन? उसे जलदी...... बुलाओ''

मां विवश हो जाती। अपने पति और अकनंदुन को साथ लेकर बाहर निकल आती। जोगी अकनंदुन को अपनी तरफ खींच लेता।

"भूख लगी है।'' जोगी कहता

"साग-भात तैयार है, जोगी महाराज।''

"नहीं, मुझे मांस चाहिए''

"क्षमा करें जोगी महाराज। मांस इस समय कहां से मिल सकता है।''

"मुझे किसी पशु का नहीं, तुम्हारे बेटे का मांस चाहिए"

"त्राहि! त्राहि। यह आप क्या कह रहे हैं महाराज।" शोक में डूबी मां का स्वर व्याकुल होता।

लोककथा में दर्ज है कि माता पिता ने विवश होकर अपने बेटे को मार डाला। उस का मांस बड़ी देगची में पकाया। फिर उसे चार थालियों में परोसा गया। एक थाली जोगी के लिए। दो थालियां माता-पिता के लिए। चौथी थाली अकनंदुन के लिए।

"जाओ खिड़की से अकनंदुन को बुलाओ" जोगी मां से आदेश के स्वर में कहता।

"अकनंदुन। अकनंदुन" आकुल कंठ से मां पुकारती।

"आया मां।...." वापस अकनंदुन की आवाज़ गूंजती। मां जोगी की माया में उलझ कर रह जाती। पीछे मुड़कर देखती तो न कहीं जोगी होता और न परोसी गई थालियां ही दिखाई देती।

निर्वासन में मां अकनंदुन की कथा ही भूल गई थी। पराये शहर में सौतेली-धूप में उस का जैसे मर्मस्थल ही सूख

गया था। वह जहां, जिस दिशा में भी देखती धूल, धुंआ, रेत और कंटीली झाड़ियां ही नज़र आतीं। कहां चार मंज़िला मकान की खिड़कियों से देखने की अभ्यस्त मां, इन दिनों खिड़की से देखने के लिए विवश कर दी गई थी। वह जब-जब खिड़की से बाहर देखती तो कांपने लगती। उसकी यह हालत देख कर ही मैंने उसे खिड़की से बाहर देखने के लिए मना भी किया।

एक दिन मैंने मां से कहा।

"चलो मां, आज मैं तुम्हें अकनंदुन की कथा सुनाऊँगा"

"मां को रुलाना चाहता है।" हंसते हुए मां ने कहा।

"नहीं मां। ऐसी बात नहीं"

"मैं मज़ाक कर रही थी। अच्छा चलो सुनाओ। देखती हूं तुम्हें कहानी कहने की कला आती है या नहीं।"

और मैंने कहानी शुरू की। तख्तपोश पर मां तनिक लेट गई।

"मां। इस बार हुआ यूं कि जोगी के आने से पहले ही अकनंदुन मारा गया। वह अपने बारहवें जन्मदिन के लिए बाज़ार से कुछ विशेष लाने गया था। शायद डाकखाने से कुछ

लिफाफे। वे लिफाफे उसे किन्हें लिखने थे, कुछ पता नहीं। हो सकता है वे उसे उन मित्रों को लिखने थे जो हिजरत कर गये थे। मारा गया अकनंदुन। सड़क पर एक हथगोला फट गया था जिसने उस की जान ली। वह हथगोला उसके ही हमशक्ल किसी दूसरे अकनंदुन ने सुरक्षा बलों पर फैंका था। बहुत रोई अकनंदुन की मां। कुछ ही दिनों में जोगी आने वाला था। तब वह जोगी को क्या कहेगी। उसे कैसे अपनी अमानत सौंप देगी? नहीं, नहीं, वह जोगी को अपना मुहं नहीं दिखा पाएगी। वह कहीं चली जायेगी ... छिप जाएगी। अब उसका कौन था यहां। पति पहले ही अपनी राह जा चुका था। अब बेटा भी नहीं। नहीं, नहीं, अब वह वहां नहीं रहेगी। पत्थर बांध कर नदी में डूब जाएगी। उसके बाद अकनंदुन की मां कहां गई, कोई नहीं जानता।

शहर में बदस्तूर हथगोले फट रहे थे। जगह-जगह सैनिक तैनात थे। सड़कों पर पहले जैसी चहल-पहल नहीं थी। बारह वर्ष पूर्व जब जोगी इस शहर में आया था तब कितनी शान्ति थी और कितनी रौनक, कितनी पावनता, कितना

सद्भाव। लोगों के चेहरे पर रजत मुस्कानें हमेशा खिली रहतीं। नदियां, मौसम, हरियाली कितने सुन्दर लगते थे। अब इन नदियों में झांकने पर अपनी ही परछाई से डर लगने लगता है। अविश्वसनीय मौसम तथा हरियाली से सड़े हुए मांस की बू आती। जोगी खड़ाऊं पहने था फिर भी वह क्षिप्र गति से चल रहा था। जब वह अकनंदुन के घर पहुंचा तो उसे यह देख आश्चर्य हुआ कि दरवाज़े पर ताला लटक रहा था। आज तक लोक कथा में कभी, ऐसा नहीं हुआ था। कुछ अमंगल अवश्य घटा होगा। शहर का वातावरण पहले ही संदिग्ध लग रहा था। शहर में से गुज़रते हुए ऐसा लग रहा था जैसे वह मातम की राजधानी बन गई हो। मकान खाली, सूने पड़े दिखाई दे रहे थे। अधजले मकानों की संख्या भी कम नहीं थी। तो क्या इस शहर में कोई दैत्य आया है जिसने इतनी तबाही मचा दी है? कहीं अकनंदुन का परिवार भी इस तबाही में उजड़ तो नहीं गया है? पर दरवाज़े पर लगा ताला यह संकेत दे रहा था कि घरवाले डर के मारे कहीं भाग गए हैं।

जोगी काफी पैदल चल कर आया था। उसे थोड़े आराम

की आवश्यकता अनुभव हुई। वह किसी विश्रामस्थल की ओर चल पड़ा। पास के चिनार बाग में थोड़े से बचे सब्ज़ार पर वह लेट गया। लेटते ही उसकी आंख लग गई। वह बहुत देर तक सोता ही रहता यदि उसे अपने शरीर में किसी कठोर चीज़ के चुभने का आभास नहीं होता। वह हड़बड़ी से उठा। उसने कुछ सिपाही सामने देखे। उन में से एक सिपाही बंदूक की नोक छुआते हुए पूछ रहा था "तुम कौन हो और यहां क्या कर रहे हो?''

"मैं जोगी हूं''

"जोगी हो तो इस आतंक नगर में तुम्हारा क्या काम।''

"मैं बारह वर्षों के बाद इस शहर में आया हूं, और मुझे कुछ भी मालूम नहीं।''

"तो वापस जाओ, जोगी महाराज'' एक सिपाही ने झूठी भक्ति के अंदाज़ में कहा।

"कहां जाऊं? कैसे जाऊं? जब तक अकनंदुन वापस घर लौट नहीं आता'', जोगी के स्वर में करुणा थी।

"तो तब तक कारावास में रहो। हम वहां तक पहुंचाने

में तुम्हारी सहायता करेंगे।'' इस कथन पर सारे सिपाहियों ने एक साथ ठहाका लगाया। उस सामूहिक हंसी मजाक के बीच एक सिपाही का आदेशत्मक स्वर गूंजा।

"संध्या हो रही है, तुम अपना-बसेरा ढूंढ लो जोगी।''

"बसेरा। बसेरा।'', सिपाही के इस शब्द पर वह बहुत हंसा। उसकी हंसी में इतना बल निकला कि वे सारे सिपाही वहां से बिना हुज्जत किए चल दिए।

रात को फिर जोगी अकनंदुन के घर लौट आया। दरवाज़े पर ताला यथावत् था। आस-पास के घरों में मद्धिम रोशनियां छन कर बाहर आ रही थी। वह दरवाज़े के निकट आ खड़ा हुआ और ताला हिला-हिला कर पुकारने लगा-"अकनंदुन। मेरे अकनंदुन। तुम कहां हो?'' वह काफी देर तक पुकारता रहा लेकिन कोई खिड़की तक नहीं खुली। बहुत देर बाद धीरे से एक खिड़की खुली। चांदनी रात थी और उस चांदनी में उस खिड़की से किसी स्त्री का चेहरा दिखाई दिया। उसने हाथ के संकेत से जोगी को अपने घर के निकट बुलाया।

"चुप हो जा जोगी। मेरा अकनंदुन-सो रहा है। आज ही दो साल बाद जेल से छूटा है। अभी-अभी मेरा अकनंदुन सोया है। तुम अपनी चीख पुकार से उसे मत जगा। मैं मिन्नत करती हूं जोगी। तू यहां से चला जा'', उस स्त्री की आंखों में तरलता थी और वाणी में गीलापन।

"मगर मेरा अकनंदुन?'', जागी ने दीन स्वर में कहा।

"तुम्हारा अकनंदुन मारा जा चुका है। अब वह कभी वापस लौट कर नहीं आएगा।''

"और उस का परिवार?''

"पता नहीं। अब जोगी तू चला जा'', उस स्त्री के स्वर में चिढ़ थी। जोगी ने उस मां की भावनाओं का सम्मान किया और वह वहां से चल पड़ा। सुबह झील के किनारे उस की लाश मिली।

"तुम सुन रही हो ना मां।

बेचारा जोगी ....''

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

हिंदी कहानी
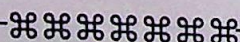
बोलो ज़िन्दाबाद

सतीश विमल

विचारों का जुलूस रुकने का नाम ही नहीं लेता था। वह स्वयं भी जुलूस के साथ रहना चाहता था। ढ़ेर सारी तालियाँ और ज़िंदाबाद के नारों की गूंज उसे जुलूस के साथ जुड़े रहने को प्रेरित करती रही।

यह अपने भाषण के बारे में सोचता रहा। आज उसने सचमुच कमाल ही कर दिया। मंत्री जी जैसे प्रबल प्रवक्ता की भी छुट्टी होगई। आज उसे पता चला कि नेता होना चित्रकार होने से कितना बेहतर है। जीवन भर वह अपने दृष्टिकोण को रंगों और आकृतियों के माध्यम से अभिव्यक्त करता रहा। परन्तु आज एक छोटे से भाषण ने उसे जो मान-सम्मान और मान्यता दी वह जीवन भर की कला-साधना भी उसे न देसकी थी। आज तक उसके समक्ष समझने वालों की कमी थी, पर

आज उसे न सिर्फ सुना गया बल्कि समझा गया और उससे सहमति भी जताई गई। विचारों का जुलूस चलता रहा। आतंकवाद से बेहतर अभी कोई विषय नहीं, जिसपर बोला जाए। उसने भी मौसम के हिसाब से बात की। बुश या वाजपेयी की तरह नपे-तुले शब्दों में बोलने की उसकी विवश्ता न थी। वह दिल खोलकर बोला। राय दी, सुझाव दिए, शायरी की, ध्‌मकियां दी और आतंकवाद समाप्त करने का संकल्प भी लिया। तालियां पीटी गईं, 'ज़िंदाबाद' के नारे लगाए गए। उसकी खूब जयकार हुई। वह आकाश की ऊंचाइयों पर उड़ने लगा .... पर जुलूस के साथ ही जुड़ा रहा।

गाड़ी घर के फाटक पर एक झटके से रुकी। वह जुलूस से अलग होगया। मन को किसी अनजान भारीपन ने घेरा। एकटक वह अपने बंगले को देखता रहा। हर चीज़ मौन के आवरण में लिपटी थी। चित्रकार जिस मौन पर आसक्त था, उसी मौन से आज वह न जाने क्यों बहुत डरा।

बरामदे की सीढ़ियां चढ़ते हुए, सुखिया की नज़र उसपर पड़ी। उसने पूछा, ''आप आगए साहेब!" वह बिना उत्तर दिए

चुपचाप सीढ़ियां चढ़ने लगा।

"साहेब, आपसे मिलने थोड़ी देर पहले एक लड़की आई थी''। वह रुक गया और सुखिया की ओर ग़ौर से देखा। कहा कुछ नहीं। केवल आंखों ने एक मौन-प्रश्न फेंका।

"उसने अपना नाम नहीं बताया। काम भी नहीं। सिर्फ मुझसे एक काग़ज़ मांगा, आपके नाम एक पत्र लिखकर मुझे दिया।''

बेचैनी अब उसकी आंखों में उतर आई थी। पर वह अभी भी चुप था।

"चिट्ठी बैठक की मेज़ पर रखी है साहेब।''

सुनते ही वह तेज़-तेज़ क़दमों से चलकर बैठक में पहुन्चा। चिट्ठी मेज़ से उठा कर खोली, पढ़ी ... लिखा था:

"आतंकवाद पर बोलते हुए तुम बहुत अच्छे लग रहे थे। बड़े ही इम्प्रेसिव। होते भी क्यों नहीं। आतंकवाद के बारे में आतंकवादी से बेहतर और कौन जान सकता है ? अरे चौंक गये। मैं सच कह रही हूं, प्रकृति की सुंदरता को कैनवस पर

उतारने वाले चित्रकार, तुम भी एक आतंकवादी हो। तुम्हारे सर्वश्रेष्ठ चित्र तो यही कहते हैं। हां यह अलग बात है कि ऐसे चित्र तुमने प्रदर्शित नहीं किए और आश्चर्य की बात है कि स्वंय भी उन्हें भूल गए। ग़ौर से देखो तुम्हारे घर का हर कोना एक ऐसा ही चित्र है जिसमें तुम्हारे फैलाए आतंक को स्पष्ट देखा जा सकता है। चौक में जुलूस को साथ लेकर आतंकवाद समाप्त करने का संकल्प तो तुमने लिया, परन्तु अपने आसपास इन सजीव चित्रों में फैलाए आतंक का क्या करोगे।''

चिट्ठी का बोझ उसके कांपते हुए हाथ उठा न सके। हलकी सी आवाज़ के साथ गिरे काग़ज़ की प्रतिध्वनि का धमाका केवल उसी ने सुना और महसूस किया। "सजीव चित्रों में फैलाए आतंक का क्या करोगे?'' यह प्रश्न एक हथौड़े की तरह उसके मस्तिष्क पर पड़ता रहा। वह व्यथित हुआ। बैठक से निकलकर तेज़-तेज़ क़दमों से सीढ़ियां चढ़ता हुआ वह स्टुडियो में प्रविष्ट हुआ। दीवारों पर लटके चित्रों पर नज़रें दौड़ाईं। इधर-उधर रखी पड़ी तस्वीरों को निकाला, देखा, पर उसपर लगाया गया आरोप सिद्ध नहीं हुआ। कुछ पल दुविधा

में सिर थामे वह स्टुडियो में खड़ा रहा, फिर आराम की सांस लेकर कमरे से बाहर आया। गलियारे में निश्चिन्त होकर चलने लगा। सिगरेट जेब से निकालकर सुलगाई, और ढ़ेर सारा धुआं अपने आस पास बिखेरा। धुऐं में खुद को लपेटना उसे सदैव अच्छा लगता था। धुऐं के केनवस पर उसके कितने ही नये चित्रों ने आकार ग्रहण किया था। आज भी धुआ यूँ ही नहीं बिखरा। धुऐं के केनवस पर कुछ पुराने चित्र उभरे:

पहला चित्र : पुत्री जैसी एक लड़की की मांग में चित्रकार द्वारा भरा हुआ सिंदूर मांग की सीमाओं से निकलकर लड़की के शरीर और आत्मा पर एक आतंक की तरह बिखर गया है ....

दूसरा चित्र : पुत्र जैसा एक लड़का चित्रकार के विचारों के भारी बोझ की गठरी अपने कंधों से उतार कर अज्ञात अंधकारमय पगड़ंडी पर जा निकला है। अंधेरा अज्ञात पगड़ंडी से रंगता हुआ फ्रेम से बाहर फैल रहा है ...

तीसरा चित्र : पत्नी जैसी एक औरत की बड़ी-बड़ी आंखों

में छोटे-छोटे सपनों की असंख्य लाशें नग्न पड़ी हैं। हर लाश के वक्ष में घोंपा हुआ ख़ंजर चित्रकार की तूलिका जैसा है ...

वह आगे नहीं बढ़ सका। सामने का अवरुध उसे पीछे मुढ़ने पर विवश कर गया। बदहवास सा वह स्टुडियो में फिर प्रविष्ट हुआ। यादों के और अपनी सोचों के सारे रंग समेटे और उनका जुलूस लेकर वह रात के अंधेरे में निकल पड़ा। संबंधों के आतंकवाद के सारे रिकार्ड उसके साथ थे।

अगली सुबह बड़े चौक के बीचों-बीच लोगों ने एक संकल्प को देखा जो एक सुंदर भाषण सा था या एक सजीव चित्र सा .... "बोलो ज़िंदाबाद।"

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

हिंदी कविता
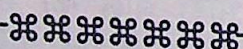
विस्थापन

डॉ. अरूणा शर्मा

तुमने देखी हैं क्या बेचारगी, रोती आंखें
कोई चेहरा लिप्त भय में
तेज़ आंधियां और फड़फड़ाती लौ
दीप रक्त-सिक्त
सिर काटती बरछी
और हाथ बन्धे महारथी ?
आओ मेरे साथ यहां
देखो गुलों की सुलगती राख
उपवनों में श्मशान
धुँआती चिताएं
लू से झड़ते फूल
दम तोड़ते कहीं सेब
कहीं बादाम

टूटते शिकारे को फिर से
ठोक दी जाती कीलें
फिर से बना लें आशियांना बेघर
तुम्हीं बताओ
चप्पू की ओट में
क्या जिया जाता है
सीने पर लौटते विषधर लिए
क्या सोया जाता है
और हम हैं कि जिये
भूलने के दु:ख
धरती बिछा
और आकाश ओढ़कर
कौन सा उत्सव मनाया जाता है
हमने बस रातें काटी हैं
दिन बिताएं हैं

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘
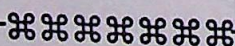
मलयाळम् कविता

महान दीवार पर

(वांग मेंग को)

के. सच्चिदानंदन

मैं दीवारों में विश्वास नहीं करता।
विश्वास करता हूँ जल में।
जल में, जड़ों में, प्रेम में,
क्योंकि दीवारों के ख़िलाफ़ काम करते हैं वे।
सारी दीवारों की नींव है
मनुष्यों, पशुओं, पौधों के रक्त में।
न ही मैं रखवाली करता हूँ सीमाओं की।
ईर्ष्यावश जो रखवाली करते हैं उनकी
वे वही हैं जिन्होंने उन्हें बनाया है।
उस मरीचिका से जो विलग करती है
एक सदी को दूसरी सदी से

देखी है हमने उन सीमाओं की भंगुरता

जिनहें हमने बनाया है।

विश्व के पुनः आरेखित नक़्शे से

निहारते हैं हम इस दीवार की निःसार महिमा

जो कुछ भी नहीं बचा सकती।

शहंशाहों ने कभी नहीं सोचा होगा

कि बन जायेगी यह एक दिन

पर्यटकों की उत्सुकता

और बच्चों का ऊँट।

लौटते समय हम ले आते हैं दीवार की

नाजुक मृण्मय-प्रतिकृतियाँ पड़ोसियों के लिए:

लाओ-त्से की एक यादगार।

................अनुवाद : ब्रजेन्द्र त्रिपाठी

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

गुजराती कविता

रात

जगदीश जोशी

रास्ते की बतियों का प्रकाश
मेरी अँधेरी भीत पर
घेरे चित्रित करता है।
उससे कौन कहेगा कि
मेरा अतीत मेरे आस-पास
इसी तरह
घेरा बरकर पड़ा है
और इस घेरे के मध्यबिन्दु की तरह
मेरा भविष्य है।
खेलते-खेलते रेती में बने खड्डे में
आज समुद्र खामोश हो छिप गया है-

और आवाज़ करते हैं किनारे पर के सीप।
जलचरों पर मुझे दया आती है
ये बिचारे कहाँ जाएँगे?
उस दिन
ट्रक के साथ टकराए एक शख़्स का शरीर
रास्ते पर कैसे जगह-जगह बिखर गया था?
किसी के भग्न प्रणय को व्यक्त करते
पत्रों की तरह।
वह शख़्स चीखा नहीं
और यदि चीखा हो तो मुझे ध्यान नहीं ....
मैं तो व्यस्त था ट्रक का नम्बर लिखने में
हस्तरेखा ज्योतिषी के विज्ञापन-पट पर
मेरी रेखाएँ उछलती हैं:
समुद्र शांत है
रेत सफ़ेद है
कुत्ता काला है ...
वह किसी गंध की तलाश कर रहा है।

इसे कौन कहेगा कि यह गंध तो

मेरी अँधेरी भीतों पर

घेरे के रूप में

सुरक्षित है।

सियार को लम्बी आवाज़ में रोना सुहाए

ऐसी रात हो गयी है।

.... अनुवाद : ब्रजेन्द्र त्रिपाठी

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘
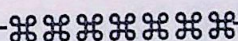
संस्कृत लघुकथा

यही तो मैं हूँ

ओमप्रकाश ठाकुर

एक चित्रकार के मन में विचार आया कि मैं किसी अतिसुन्दर बालक का चित्र तैयार करूं, जो देखने में देव-बालक प्रतीत हो, जिस का भोलापन देखने वाले को बरबस अपनी ओर खींच ले, उस के दर्शन मात्र से वातसल्य अमड़ने लगे। यह विचार आते ही वह किसी ऐसे बालक की तलाश में जुट गया। अन्ततः उसे अपनी कल्पना को साकार करने का अवसर मिल ही गया। एक ग्रामीण बालक में उसे यह मोहिनी छवि दिखाई दी, जिसको रूपायित करने को वह अधीर हो रहा था।

बालक को सामने बिठा कर चित्रकार की तूलिका रंगों और रेखाओं के खेल में व्यस्त हो गई। धीरे-धीरे रेखाओं ने दिव्य-सौन्दर्य सम्पन्न बालक का भव्य रूपाकार ग्रहण किया। अपनी इस अनूठी कलाकृति पर कलाकार प्रसन्न था। दर्शकों

ने सराहा, कलाप्रेमियों ने बधाई दी। चित्र के प्रिंट तैयार हुए और कलादीर्घाओं की शोभा बढ़ाने लगे।

अनेक वर्षों के अन्तराल के बाद चित्रकार के मन में फिर एक स्फुरणा उठी, कि ऐसा चित्र बनाया जाए, जो देखने मात्र से भय और आतंक की सृष्टि कर दे, आकृति ऐसी वीभत्स हो, कि देखने वाला कांप उठे।

ऐसी आकृति के ढूंढने में उसे देर न लगी। अधीक्षक की स्वीकृति पाकर वह एक बड़ी जेल में पहुंचा और कैदियों को देखने लगा। अचानक एक कैदी पर उस की नज़र ठिठकी। ओह, कितनी भयंकर आकृति। क्रूरता और नृशंसता की प्रतिमूर्ति। खूंखार जानवर जैसी बड़ी-बड़ी लाल आंखें रोंगटे खड़े करने वाली थीं।

चित्रकार की चित्र बनाने की इच्छा जानकर कैदी भयानक हंसी हंसा। फिर बोला, "क्या करोगे मेरा चित्र बनाकर। कहीं कोई कुत्सित और कुरूप के भी चित्र बनाता है क्या ?"

चित्रकार ने चित्रकला का महत्व समझाते हुए उसे कई वर्ष पुराना गामीण बालक का चित्र दिखया। कैदी ने चित्र को ध्यान से देखा, आंखे डबडबा आईं। झर झर आंसूं बहने लगे। चित्रकार को विस्मय हुआ, क्या पत्थर से भी जलधारा प्रवाहित होती है ? उस ने कैदी से पूछा, क्या तुम इस बालक को जानते हो ? कैदी कुछ निमिष मौन रहा, फिर एक लम्बी सांस लेकर बोला, बाबू यही तो मैं हूँ ।

सुनते ही चित्रकार के पैरों से जैसे धरती निकल गई। उसने कहा, "भैया, कहां तुम्हारी भयावनी आकृति और कहां यह भोला-भाला सुकुमार ?" कैदी बोला, "परम सत्य यही है, चोर डाकुओं की संगति ने मुझे आज यहां पहुंचाया। लूटमार, हत्या डाकाज़नी-यही मेरा पेशा है। देखना, मेरा चित्र न बनाना।"

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘
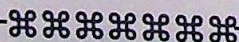
ओड़िया कविता

चंपाफूल

अपर्णा महांति

मुझे छिपा रखने की आकुलता में
अपने से छिप छिप घूमोगे
और कितने दिन
मैं तो
कलंक का चंपाकूल
एक ज़रा पवन लगे
पकड़ में आ जाए।
और तुम तो जानते हो यहां सभी का
मोक्ष की बजाय कलंक से
अधिक प्रयोजन।
किसी की सेज तले
किसी के पाकेट में

या किसी की कविता–कापी के
पृष्टों की ओट में
सूख सूख झर जाते समय
मेरी कितनी आशा
तुम मेरे व्योमकेश होकर
सारे आवरण तुच्छ कर
स्पर्द्धित जटाएँ पसारे
उपस्थित होते !
गंगा या चन्द्र के साथ
महक चहकने को
मुझे भी मिल जाता
अंजुरी भर ठाँव !!

.... अनुवाद : महेन्द्र शर्मा

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

पंजाबी कहानी

चल, बुध्दू कहीं की

डॉ. अरविन्द्र सिंह अमन

अपनी चौथी कक्षा में पढ़ रही बच्ची के बारे में हिन्दी पत्रिका की सम्पादिका से बता करते हुए उसकी माँ ने कहां कि वह शायरी के नाम पर कभी कभार तुक-बंदी करती रहती है, तो सम्पादिका ने बच्ची से पूछा।

"तुम्हारा नाम क्या है, बेटा।"

"शुष, शुषमिता नाम है मेरा," बच्ची ने मासून निगाहें सम्पादिका पर डालते हुऐ कहा।

"तुम शयरी करती हो ?" सम्पादिका ने एक और सवाल किया।

बच्ची ने फोरन "हां" में सिर हिलाया।

"किस विषय पर?" सम्पादिका ने हैरत भरी निगाहें

उस पर डालते हुऐ पूछा।

"लव पर," बच्ची ने जवाब दिया। "लव पर ही क्यों, कुश पर क्यों नहीं ?"

"नहीं सिर्फ लव पर," इस बार बच्ची ने ज़रा जोर देते हुऐ कहा।

"और कुश?" सम्पादिका ने पूछा।

बच्ची एकदम बोली "चल बुद्धू कहीं की। कुश नहीं, शुष, शुष नाम है मेरा।"

.... अनुवादः लेखक

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

हिन्दी कहानी

रामप्रशाद

शकुन्त दीपमाला

कुछ बच्चे दुनिया में सब से दुखी जीव होते हैं। वे कितने बेबस होते हैं और कितने मासूम। क्या-कया कुछ करना चाहते हैं परन्तु कर कुछ नहीं सकते। मैं ज़ब कभी किसी असहाय असमर्थ बच्चे के बारे में सोचती हूं तो रामप्रशाद का चेहरा मेरे सामने आ जाता है। बचपन के धुंधले दिन बिसरते जा रहे हैं परन्तु रामप्रशाद का छोटा सा पिचका हुआ चेहरा जो बात करते वक्त ज़रा ज़्यादा खुल जाता था और उसके बेतरतीब दांत सामने दिखाई देते थे, मुझे बिल्कुल वैसे ही याद हैं। जब वह कोई गम्भीर बात करता था तो उसके छोटे से माथे पर दो पतली-पतली लकीरें दिखायी देती थीं। उसका चेहरा एक छोटी किताब था जिसको आसानी से पढ़ा जा सकता था। दुःख की पहली परिभाषा मैंने उसी किताब के एक कोने में लिखी हुई देखी थी।

वह मेरे भाई का दोस्त था या मेरा, हम दोनों ही किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुच सके। स्कूल से छुट्टी मिलने के बाद कोई एक- आध घन्टे के भीतर ही वह हमारे घर आ जाता और अक्सर उसके हाथ में एक लाल रंग का छोटा सा रूल होता। फिर हम तीनों बाग में खेलने लग जाते परन्तु वह खेल, खेल जैसा कुछ न होता। मुझे याद नहीं आता कि हमने कभी दौड़ कर उसे छुआ हो। वह हमारे साथ कभी खेलता नहीं था। हम या तो बाग में उतरने वाली दो पौड़ियों पर बैठ जाते या सारा समय सब्ज़ पत्ती के पास खड़े हो कर उसकी बातें सुनते। जीवन के कुछ कटू सत्य उसने स्वयं घटित होते देखे थे। उसका अबोध हृदय किसी विचित्र डर से घिरा हुआ लगता था और उस की आंखें हमेशा डर से फैली होती थी। वह वास्तव में एक ग़रीब लड़का था। उसके बाप नहीं थे और वह घर में बिल्कुल अकेला था एवं बीमार रहने वाली मां के सिवाय उसका कोई न था।

वह हमें सुनाता था कि एक साल पहले कैसे उसके पिता जी को उन सब के न चाहने पर भी मौत बेदर्दी से घसीट ले गयी थी। उसके पिता जी अर्से से किसी बीमारी के शिकार थे

और हमेशा खाट पर पड़े रहते थे। एक रात को वह बहुत बीमार हो गये और उसकी मां ने उसे जगाया। उसने देखा उसके पिता जी ने एक खून की बहुत बड़ी कै की हुई थी और उन के मुंह से झाग निकल रही थी। उसने और उसकी मां ने जल्दी से उनका बिस्तर फशं पर बिछाया और उसकी दुर्बल देह को उस पर लिटा दिया। उन्होंने इशारे से उसे अपने पास बुलाया और उसका हाथ अपने ठन्डे हाथ में ले कर ज़ोर से दबाया। वे कुछ बोलना चाहते थे मगर मुंह से ढेर सारी झाग ही उगल सके थे। बड़ी ऐंठन के बाद ऐसे लगा जैसे उन्हें आराम आ गया। वे खुली आंखों से एक तरफ देख रहे थे। फिर उसकी मां ने उनकी आंखें धीरे से बन्द कर दीं और वह फूट-फूट कर रेने लगी। वह भी रात भर एक कोने में बैठ कर सुबकता रहा। आगे सुबह होने पर क्या हुआ किसी ने उन की मदद की या नहीं, यह बात शायद उसने सुनायी हो परन्तु मुझे याद नहीं। उस दिन के बाद उसकी मां और वह घर में अकेले थे। उसके पिता जी उसे बहुत प्यार करते थे। वे पुलिस में थे और वह छोटा-सा रूल उन्हीं का था जो वह हमेशा अपने हाथ में रखता था।

उसका साथ हमें अच्छा लगता था। वह तब तक हमारे पास रहता जब तक हमारे पिता जी का चपरासी सरकारी कागज़ों की काली ट्रे उठा कर गेट के अन्दर दाख़िल न होता, चपरासी के आते ही वह घबरा जाता और अपना छोटा सा रूल दोनों हाथों में दबा कर दूसरे गेट से बाहिर हो जाता। पता नहीं वह पिता जी की हैट से डरता था या उनके बड़े कोट से यह मैं खुद भी नहीं जानती। वास्तव में हम सब उन से डरते थे। सख़्त सर्दी के दिनों में जब आसपास की पहाड़ियां बर्फ से ढक जातीं और शहर में भी बर्फबारी के सम्भावना होती तो उस शाम हम अपने घर-कोट पहन कर बाग में उसका इन्तज़ार करते। वह अपना लाल रंग का पलश का कोट पहन कर आता जिस पर पीतल के पीले-पीले बटन लगे हुए थे। यह कोट ज़रूर उसके पिता के ज़माने का था जो उसकी दादी ने अपने पोते के लिये सम्भाल कर रख छोड़ा था। परन्तु लाल रंग की शोख़ी उसका पुरानापन साफ ज़ाहिर नहीं होने देती थी। शायद इसी लिये लाल रंग के रूल के साथ-साथ एक और गर्व का चिन्ह उसके चेहरे पर उभर आता। हम उसे ठेस नहीं पहुंचाना चाहते थे और उसे कहते थे 'तुम्हारा कोट वाकई बड़ा

सुन्दर है, हमारे कोटों से भी ज्यादा।'

वह हमें कई बातें बताता था। उसने आधी रात को उठ कर कई बार घने पेड़ों के नीचे छोटी-छोटी परियों को नाचते देखा था। उसने आसमान जितने लम्बे भूत भी देखे हुए थे। अपनी ख़मदार टांगों के बावजूद भी उसका हमारे ऊपर गहरा प्रभाव था। हमारी नज़र में वह बड़ा अनुभवी और बहादुर बच्चा था।

एक दिन हमारी एक पाली हुई सुन्दर चिड़िया मर गयी। मैंने और मेरे भाई ने पूरा मातम मनाया। हमने उसे कफन ओढ़ा कर दफ़ना दिया। उसकी कब्र को दिन भर सजाते रहे पत्थरों से, फूलों से। शाम को जब हमने उसे चिड़िया की कब्र दिखायी तो उसे बड़ा अफसोस हुआ। चिड़िया के मरने का नहीं बल्कि उसको दफ़नाने का। अब यह चिड़िया जब कहीं जन्म लेगी तो मुसलमान हो जायेगी मरी हुई चीज़ को या तो जलाना चाहिये या फिर पानी में बहाना चाहिये। दफ़नाना तो बिल्कुल नहीं चाहिये। हमारे इर्द-गिर्द जितने भी मुसलमान रहते थे, वे सब गरीब लोग थे और हम यह नहीं चाहते थे कि हमारी लाड़-प्यार से पली चिड़िया कहीं फर्जी के घर जन्म ले ले।

उसने फिर चिड़िया को कब्र से निकाल कर पानी में बहा दिया था।

फिर एक दिन पिता जी की तब्दीली हो गयी। अगले दिन सुबह सवेरे चलना था। हमारे बहुत से दोस्त हमें मिलने आये। उस दिन हम बहुत खेले क्यों कि वहां वह हमारा आखिरी खेल था। उस दिन हमें किसी ने नहीं टोका क्योंकि न ही हमें स्कूल का काम करना था और न ही मास्टर जी ने घर में पढ़ाने आना था। अन्धेरा काफी घना हो गया था, सब बच्चे मजबूरन बारी-बारी अपने घर चले गये। परन्तु रामप्रशाद जो किसी खेल में शामिल न होता था, सब्ज़पत्ती के पास चुपचाप खड़ा था। मेरे भाई ने उसे कहा "रामप्रशाद हम कल सवेरे चले जायेंगे और फिर कभी वापिस नहीं आयेंगे।"

उसने बड़ी ही उदास आवाज़ में कहा "यदि मुझे यहां किसी ने अन्दर आने दिया तो मैं इन पौड़ियों पर बैठ कर आप लोगों को बहुत याद करूंगा और मैं भगवान से रोज़ प्रार्थना करूंगा कि आप की तब्दीली फिर यहां हो जाये। मेरी बात हमेशा सच्ची होती है।"

मैंने कहा - "रामप्रशाद यदि कुछ सालों के बाद हमारी

तब्दीली यहां हो भी गयी तो हम एक दूसरे को पहचानेंगे कैसे, तब तो हम बहत बड़े हो जायेंगे।''

यह सुन कर वह बड़ा जज़्बाती हो गया था और उसने वह लाल रंग का रूल मुझे देते हुए कहा - "तुम यह रूल हमेशा अपने पास रखना, यह रूल तो बड़ा नहीं होगा और मैं जब यह रूल तुम्हारे हाथ में देखूंगा तो पहचान कर बुला लूंगा।''

अब रामप्रशाद ने जोश में मुझे तो अपना प्यांरा रूल दे दिया परन्तु यह भी ज़रूरी था कि वह मेरे भाई को भी कुछ देता निशानी के तौर पर परन्तु इस बात का उसने कुछ भी ख़्याल न किया। बाद में हमने अपनी सब्ज़पत्तियों की छोटी-छोटी टहनियां तोड़ कर एक दूसरे को कुछ दिनों की याद के लिये दे दीं जिन्हें बाद में हमने बड़े शौक से अपनी हरबेरियम की कापियों में सजा लिया। नयी जगह पहुच कर मैं अक्सर वह लाल रंग का रूल निकाल कर देखती और खुश होती कि यह रामप्रशाद ने मुझे दिया है। मेरे भाई ने कहा कि रूल तो लड़के रखते है अत: यह अवश्य ही रामप्रशाद ने मुझे दिया होगा। लेकिन मैं जानती थी कि उसने मुझे ही दिया था। अब वह रूल मेरे भाई के लिये ईर्ष्या का कारण बन गया। वह उससे घर में

कई बार गुल्ली-डंडा खेलता और कभी उठा कर खेल के मैदान में चला जाता। धीरे-धीरे मेरा एकाधिकार उस रूल से उठ गया। अब वह हम दोनों का था। लेकिन एक दिन हम दोनों का फिर इस रूल पर झगड़ा हो गया। उस झगड़े के बाद वह रूल मुझे दिखाई नहीं दिया। पता नहीं मेरे भाई ने वह रूल उठा कर किसी और लड़के को दे दिया या गुम कर दिया। उस दिन के बाद रामप्रशाद वाक़ई हम से जुदा हो गया। अब वह रूल पता नहीं कहां है और रामप्रशाद पता नहीं कहां है। न जाने अब तक वह कितने हाथों में अपने रूल को तलाशता रहा होगा।

मैं अक्सर सोचा करती थी कि अगर हम फिर कभी वहाँ जायें तो शायद वही लाल रंग का पलश का कोट पहने किसी छोटे से ऊबड़-खबड दांतों वाले रामप्रशाद को देखते ही कह उठें ''यही है रामप्रशाद''।

लेकिन कई सालों के बाद जब गुज़रते हुए वक्त के कितने ही काफिलों की गर्द यादों के सपाट रास्तों को धुंधला गयी है, आज फिर सचमुच ही बचपन के उस छोटे से कस्बे से मेरा गुज़र है। मैं कोट की जेबों में हाथ गर्माती हुए पैरेड

ग्राउंड से गाड़ी के चलने के इन्तजार में खड़ी हूं। सामने पीपल के पेड़ के नीचे उन दिनों की तरह आज भी बहुत सारे बच्चे यहाँ-वहाँ खेल रहे है। मुझे याद आया, शाम को जब हम लोग घूमने निकलते तो इसी पीपल के नीचे खड़ा रामप्रशाद हमें देख कर गिल्ली-डंडा फैंक कर और कंचे समेट कर आ जाता था।

मैने पास जा कर देखा वैसे ही पेड़ के आस-पास गुत्तियों के बेशुमार निशान थे बिल्कुल वैसे ही निशान। "छुटे असी तो बदला हुआ ज़माना था'' और जैसे हर मासूम चेहरा कह रहा हो 'मुझे भूल गयी, मेरी ही पीठ पर पांव रख कर तुम आड़ू के पेड़ पर चढ़ा करती थी

"जानती हो मैं तुफ़ैल हूं जो अपने मेमने के लिये तुम्हारे घर से शहतूत के पत्ते तोड़ कर लाता था।''

"अरे नहीं, मैं किसी को नहीं भूली। भूलना मेरी फ़ितरत नहीं। कैसे भूलते हैं लोग। याद तो खज़ाना है।''

एकाएक मेरी नज़र पलश के एक जाने-पहचाने कोट पर रुक गयी। लड़के की मेरी तरफ पीठ थी। जल्दी ही पास जा कर देखा वही ऊबड़-खाबड़ दांतों वाला मासूम चेहरा, बिल्लोरों से भरी हुई जेबें। पीतल के तीन बटनों के स्थान पर

बचा हुआ एक बटन। मेरे मुंह से अचानक निकल पड़ा "रामप्रशाद''। बच्चे ने मेरी तरफ देखा और चुपचाप देखता रहा जैसे किसी अजनबी से सामना हो गया हो। इससे पहले कि मैं कुछ और पूछती, गाड़ी का हार्न तेज़ हो गया था।

सीट पर बैठते ही मेरी स्मरण-शक्ति ने मेरे ज़हन पर ज़ोर डाल कर कहा - यह रामप्रशाद ही तो था जिसे तंगदस्ती का यह आलम कभी बड़ा नहीं होने देता।

जिस दिन रामप्रशाद का पुराना कोट उतरेगा मैं समझूंगी कि जन्नत के रास्ते इतने तंग नहीं हैं।

———⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘———
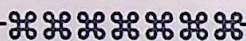
हिन्दी कविता

ज़ख़्मी लोकतन्त्र से ....

शेख मोहम्मद कल्याण

कर रहा हूं तलाश
भटक रहा हूं निरंतर
दर दर
हर गली
नुक्कड़ नुक्कड़
घूम रहा हूं
कि जैसे
घूमता है लटटू
बाप से ज़िद करते बच्चे
मां की लोरी में निंदियाता बचपन
अठखेलियां करती
नई दुल्हनों की

टोलियों की टोलियां
इन सब की चीखें
ज़हन पर चढ़ रही हैं
और मैं हूं स्तब्ध
कि पूरा समय भौंचक खड़ा है
भौंचक हैं अधजली दीवारें
जो अभी कुछ दिन पहले
घर होने पर इतराती थीं।
घर थे ...
जिनमें थे माता पिता
नस्लें थीं घरों में
यहीं सपने जवान होते थे
जिन्हें देख मां बाप इतराते थे।
लेकिन
वह आतंकित करने वाला एक बादल का टुकड़ा
बरसा जाता है
कहीं भी तेज़ाब।

और चढ़ती सदी के मुहाने पर

यह सोचता खड़ा हूं

कि किस ज़मीन पर खड़े होकर

कौन से आकाश तले

कब बे-हिचक अंगड़ाई लेंगे

हम ?

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

भूख और चाँद

रति सक्सेना

वह रचती है चाँद
काले चकले पर
देती हुई आकार सपनों को
फुलाती-नचाती आग पर
ज़िन्दगी के तीन चौथाई हिस्से को
उतर आती है फूली रोटी बन
भूख की थाली पर।
हर बार तवे से उतरती
सोचती रह जाती है
क्या है वह ?
भूख या चाँद!
हर बार उसकी सोच
भूख निगल जाती है।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

डोगरी कविता

अज्ञात दूरियों का आकाश

डॉ. जितेन्द्र उधमपुरी

तुम एकायक
होगई कितनी बड़ी
अपने साये से भी बड़ी
तुम्हें रूप मिला
विस्तार मिला
और मैं सिमटते-सिमटते
ठिगना होगया हूँ

हो सकता है
कल तक बिखर जाऊँ
हवाओं में
पीले गुलाब की पत्तियों की तरह

तुम धीरे-धीरे

उतर रही फूल की पंखुड़ियों में

बिखेर रही

रूप और यौवन की महक

लाज की लाली

नहीं जानता

किस लिए बंध रहा हूं मैं

.... अनुवादः स्वयं कवि

———⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘———
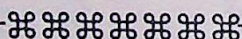
मराठी कविता

आँखे

बलवंत धोंगडे

यूँ ही बीच-बीच में
आंखों से
मिल जाती हैं आंखे
भूले-चूके
तो कभी नज़रें चुराकर
एक-आध शब्द
अस्पष्ट सा, पथराया हुआ
सुसत पड़ जाता है
दो चार स्पर्श
जोश से भरे
आज भी उसी तरह जब जब
भूले भटके छू जाते हैं

शरीर पर गुपचुप

खुलासे के नक़ूश छोड़ते हुए

टपक पर झरते

पत्तों जैसे वह स्पर्श

मैं भी, तू भी

वजूद से कटे-कटे

हिलते-ढुलते रहते हैं

लहरों पर

आंखें मूंदे

खेल देखते हैं

आंख भर

आकाश के .....

.... अनुवाद : कवि

⌘⌘⌘⌘⌘⌘⌘

हिन्दी समिति - २००६
रेडियो कश्मीर श्रीनगर

चौधरी गुलाम हुसैन ज़िया	(केन्द्र निदेशक)
के. एन. यादव	(अधीक्षण अभियंता)
रफ़ीक राज़	(उपनिदेशक कार्यक्रम)
जावेद इकबाल	(उपनिदेशक कार्यक्रम)
अब्दुस्समद बेग	(वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी)
बशीर मलिक अतहर	(वरिष्ठ समाचार संवाददाता)
पीरज़ादा अब्दाल महजूर	(कार्यक्रम निष्पादक)
सैय्यिद हुमायूं क़ैसर	(कार्यक्रम निष्पादक)
इनायत उल्लाह गौहर	(कार्यक्रम निष्पादक)
कंवल कृष्ण लिट्टू	(कार्यक्रम निष्पादक)
सतीश विमल	(समिति संयोजक)
सुनील धर	(प्रसारण निष्पादक)
समीना शाह	(प्रसारण निष्पादक)
नरेन्द्र पाल सिंह	(प्रसारण निष्पादक)
बशीर अहमद	(प्रधान लिपिक)
स. सच्चा सिहं	(प्रधान लिपिक)
निसार बाला	(लाइब्रेरियन)
ऐ. के. हण्डू	(वरिष्ठ अंभियांत्रिकी सहायक)
एन. ज़ेड़. किरमानी	(आशुलिपिक)
स. इच्छपाल सिंह	(लिपिक)
राजेन्द्र कौल	(लिपिक)
अब्दुल हमीद कसाना	(वरिष्ठ उदघोषक)
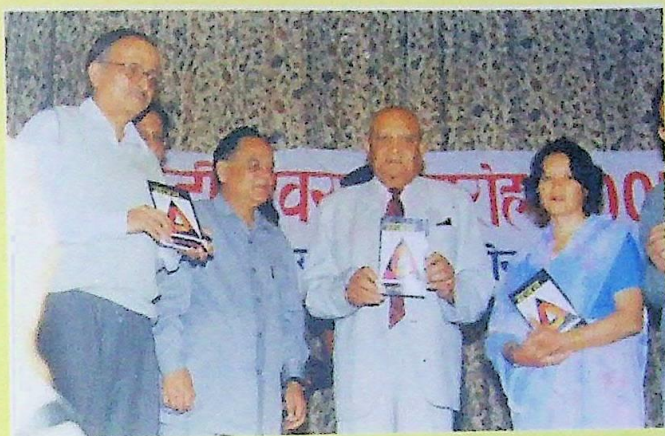
'सृजन-२००५' का विमोचन कनते राज्यपाल
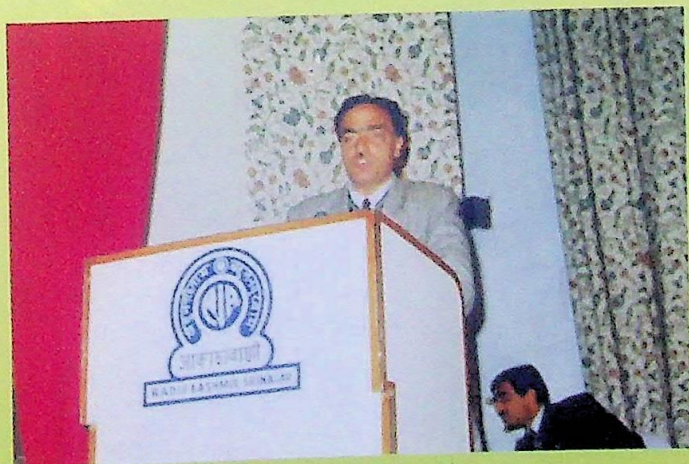
रफीक राज़ हिन्दी दिवस पर संभोदन करते हुए

११ सितम्बर २००५ को उस्ताद बिस्मिल्लाह खां से श्रीनगर में रेडियो कश्मीर के लिए साक्षात्कार के दौरान केन्द्र निदेशक जी. एच. ज़िया के साथ प्राण किशोर
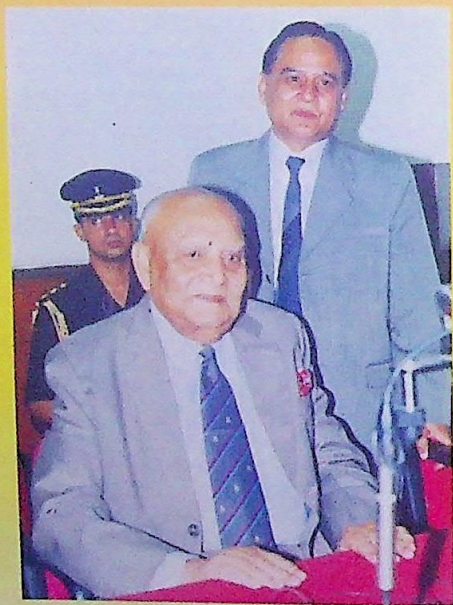
राज्यपाल ले. जनरल (सेवानिवृत) श्री एस. के. सिंहा के साथ केन्द्र निदेशक रेडियो कश्मीर के स्टूडियो में एक साक्षात्कार के दौरान

हिन्दी दिवस - २००५ पर राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करते कर्मचारी एवं अन्य हिन्दी प्रेमी

केन्द्र निदेशक चौधरी गुलाम हुसैन ज़िया राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम का स्वागत करते हुए। राज्य के मुख्यमंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद भी इस अवसर पर मौजूद थे।

केन्द्र निदेशक महोदय राज्य के राज्यपाल, ले. जं. (सेवानिवृत) एस. के. सिंहा से गांधी जयंती के अवसर पर केन्द्र की ओर से सद्भावना पुरस्कार प्राप्त करते हुए